खण्ड काव्य

खण्ड काव्य से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य

काव्य और उसके भेद

काव्यशास्त्र के प्राचीन आचार्यों ने काव्य के दो प्रमुख प्रकार बताए हैं–

(1) प्रबन्ध काव्य, (2) मुक्तक काव्य। इनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है–

(1) प्रबन्ध काव्य–उस काव्य को प्रबन्ध काव्य कहते हैं, जो किसी कथा के द्वारा विकास के विभिन्न क्रमों में सुव्यवस्थित रूप से बँधा हुआ हो। इस प्रकार जो काव्य किसी महापुरुष के जीवन सम्बन्धी कथानक से बंधा हुआ, सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध हो, उसे 'प्रबन्ध काव्य' कहते हैं।

(2) मुक्तक काव्य–स्वच्छन्द लघु काव्य रचनाओं या उनके संग्रह को 'मुक्तक काव्य' कहते हैं।

प्रबन्ध काव्य के भेद

प्रबन्ध काव्य को दो भागों में विभक्त किया गया है–

(1) महाकाव्य, (2) खण्डकाव्य।

(1) महाकाव्य–महाकाव्य में किसी महापुरुष के जीवन का व्यापक वर्णन कथा के रूप में समाविष्ट होता है। उस कथा में कथा से सम्बन्धित महापुरुष के चरित्र को स्पष्ट करते हुए कई पात्र होते हैं।

(2) खण्डकाव्य–खण्डकाव्य में किसी महापुरुष या नायक के जीवन के किसी एक विशेष बिन्दु या पक्ष का वर्णन किया जाता है।

खण्डकाव्य के तत्त्व

काव्यशास्त्र के मर्मज्ञों ने काव्य के दो तत्त्वों को मान्यता प्रदान की है–

(1) कला पक्ष, (2) भाव पक्ष।

खण्डकाव्य केवल काव्य ही नहीं होता है बल्कि उसमें एक कथावस्तु भी होती है। कथावस्तु का खण्डकाव्य में विशेष महत्त्व होता है। खण्डकाव्य के समीक्षात्मक अध्ययन हेतु उसके तत्त्वों के विषय में जानना जरूरी है।

मुख्य रूप से किसी खण्डकाव्य के तीन तत्त्व होते हैं–(1) कथावस्तु या वस्तुपक्ष, (2) भावपक्ष तथा (3) कलापक्ष।

(1) कथावस्तु या वस्तुपक्ष–खण्डकाव्य के कथानक एवं उसके चरित्र-चित्रण कथावस्तु से सम्बन्धित होता है। कुछ विद्वान वस्तुपक्ष में शीर्षक, उद्देश्य आदि को भी स्थान देते हैं, लेकिन वस्तुतः ये सभी खण्डकाव्य के कथानकों में शामिल हैं। कथानक के भावात्मक अर्थ से शीर्षक का सम्बन्ध होता है। कथावस्तु के उद्देश्य का सम्बन्ध भी कथायोजन से ही होता है।

(2) भावपक्ष–खण्डकाव्य का भावपक्ष उसकी रसयोजना एवं बिम्ब-चित्रण से सम्बन्धित होता है। खण्डकाव्य में चित्रित किए गए गतिशील एवं संवेदनशील चित्रों तथा उसकी रस-निष्पत्ति का बहुत महत्त्व होता है। यथार्थ में यही किसी खण्डकाव्य की काव्यात्मक श्रेष्ठता का मानक है।

(3) कलापक्ष–खण्डकाव्य का कलापक्ष उसकी भाषा-शैली, छन्द-योजना एवं अलंकार-योजना से सम्बन्धित होता है। विषय के अनुरूप छन्दों, शब्दों, भाषा-शैली एवं अलंकारों की योजना के आधार पर खण्डकाव्य का भावपक्ष प्रभावी हो जाता है और इससे उसकी श्रेष्ठता में बढ़ोत्तरी होती है।

(1) मुक्तियज्ञ

(सुमित्रानन्दन पन्त)

कानपुर, जौनपुर, मुरादाबाद, फैजाबाद, एटा, ललितपुर जनपदों के लिए

छायावाद के प्रमुख हस्ताक्षर कविश्रेष्ठ सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा प्रणीत 'मुक्तियज्ञ' खण्ड काव्य में सन् 1921 ई० से 1947 ई० तक के मध्य घटित भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं और राष्ट्रीय एवं देशभक्ति की भावनाओं को चित्रित किया गया है।

मुक्तियज्ञ : कथावस्तु (सारांश)

'मुक्तियज्ञ' नामक खण्डकाव्य श्री सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'लोकायतन' नामक प्रबन्ध महाकाव्य का एक अंश मात्र है किन्तु अंश होते हुए भी यह अपने-आप में पूर्ण है। 'लोकायतन' पन्त जी की एक लक्ष्य-प्रधान भविष्योन्मुख काव्य है। उनके इस काव्य-संकलन में 'आदर्शवाद' तथा 'वस्तुवाद' के विरोधों को नवीन मानव-चेतना के समन्वय में ढालने का प्रयास किया है। 'मुक्तियज्ञ' 'लोकायतन' का केवल वही अंश है, जिसमें भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम की सन् 1921 से 1947 तक की घटनाओं से ही सम्बन्धित है। संक्षेप में इस खण्डकाव्य का कथानक इस प्रकार है—

1. वाणी-वन्दना–'मुक्तियज्ञ' एक विचार-प्रधान खण्डकाव्य है, जो एक निश्चित लक्ष्य को लेकर लिखा गया है। इतिवृत्तात्मक घटना के वर्णन पर विशेष बल नहीं दिया गया है, फिर भी घटनाओं का ऐतिहासिक यथार्थ अपने स्थान पर बिल्कुल ही अक्षुण है। 'मुक्तियज्ञ' की सारी कथा एक ही सर्ग के अन्तर्गत लिखी गयी है। खण्डकाव्य के प्रारम्भ में कवि 'वाणी-वन्दना' करते हुए भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम को एक मुक्तियज्ञ का प्रतीक मानकर अपने उद्देश्य को निवेदित करता है—

अलिखित ही रह जायेगी तब, नवयुग की गाथा निःसंशय।
जो भारत की मुक्ति कथा तुम, गाओ नहीं गिरे, रस तन्मय।।
कथा नहीं यह तुच्छ साधना, भू-जीवन मंगल की निश्चय।
सत्य अहिंसा की जय कविते नव भू-मानवता की युग जय।।

2. नमक-सत्याग्रह–फिर कवि पौराणिक कथाओं को नवयुग के परिवेश में ढालकर भारतीय स्वतन्त्रता की कहानी को प्रारम्भ करता है। फिर बापू को 'राम' और 'लोकमुक्ति' को वन्दिता विमूर्च्छित माता सीता का प्रतीक मानकर नमक-सत्याग्रह दाण्डी-यात्रा से कथा प्रारम्भ होती है–

यद्यपि तीस करोड़ भारतवासियों का मुख्य उद्देश्य नमक बनाना नहीं था, बल्कि वह एक ऐतिहासिक विद्रोह का प्रतीक था। बापू अपने गिने-चुने साथियों को लेकर दाण्डी-यात्रा पर चल पड़े। 200 मील की पैदल यात्रा उन्होंने 24 दिनों में पूरी की। यहीं से उनके सत्याग्रह आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। स्थान-स्थान पर उनका अभिनन्दन हुआ। बापू के इस प्रभाव को देखकर शासन के अधिकारीगण वहाँ से पलायित हो गये। राष्ट्रपिता बापू के रूप में सारा राष्ट्र निर्भीकतापूर्वक नमक का विरोध करने के लिए चल पड़ा। सत्य के इस अभियान को देखकर सारा विश्व आश्चर्यचकित हो गया। बापू ने दृढ़ संकल्प लिया—

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही उठा सका मैं यदि न नमक कर।
लौट न आश्रम में आऊँगा जो स्वराज्य ला सका नहीं घर।।

3. अफ्रीका में सत्याग्रह का श्रीगणेश–फिर अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों पर किये गये अत्याचारों के निराकरण के लिए गये। वहाँ सर्वप्रथम 'सत्याग्रह' नामक शस्त्र का प्रयोग किया। अपनी सहनशीलता से बापू इस पाशविक जगत में 'मक्खन' के पर्वत की भाँति उदीयमान हुए। वहीं उन्हें भारत को स्वतन्त्र कराने की चिन्ता हुई और वे भारत आये। उन्होंने निःशस्त्र क्रान्ति का आह्वान किया। उन्होंने कहा—

घृणा घृणा से नहीं मरेगी, बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित, भू-संस्कृति, माननीय होती न मुझे भय।।

4. अंग्रेजों का दमन-चक्र और विदेशी वस्त्रों की होली–किन्तु आततायियों ने अपने दमन-चक्र से निःशस्त्रों पर प्रहार किया। भारतनायक बापू को कारागार में बन्द कर दिया। अंग्रेजों का विश्वास था कि वे बापू के इस सत्याग्रह को भी सन् 1857 के गदर की भाँति दमन करने में सफल हो जायँगे, किन्तु यह उनकी कोरी भूल थी। सन् 1857 का गदर सामन्तों का विद्रोह था, जबकि बापू का सत्याग्रह जन-जन का विद्रोह था। बापू ने कारागार से ही देशवासियों को सन्देश दिया कि सभी लोग अनुशासित रहकर रचनात्मक

कार्य करें। इसके परिणामस्वरूप विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी। खादी का प्रयोग हुआ। स्त्रियों ने धरना दे-देकर शराबखोरी और अस्पृश्यता को मिटाया।

5. नारी-जागरण—अंग्रेजों के क्रूर दमन के पश्चात् भी सत्याग्रहियों का उत्साह धीमा नहीं पड़ा। वे अपने कर्म-पथ पर अबाध गति से बढ़ते रहे। अंग्रेजों द्वारा लाठी-चार्ज हुए, गोलियाँ चलीं, कितनी ही माँ के लालों को बलिदान होना पड़ा किन्तु इससे सत्याग्रह का दौर धीमा नहीं पड़ा, बल्कि उसमें और भी प्रखरता आई। युग-चेतना के साथ-साथ नारियों में भी त्याग, वीरता और साहस का उदय हुआ। उनका मनोबल बढ़ा। वे अब कोमलांगी नहीं रहीं, रणचण्डी बन गईं।

6. हरिजनोद्धार—हरिजनोद्धार और भारतीय अखण्डता को लेकर बापू ने जेल में ही आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया जो एक ऐतिहासिक महत्त्व की घटना बन गई। अन्त में भारतीय आत्मा की विजय हुई। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने आकर बापू के इस अनशन को तुड़वाया। इस प्रकार छुआछूत के भेद-भाव को मिटाने के लिए बापू ने जी-जान से कोशिश की और उन्हें अन्त में सफलता भी मिली। फिर बापू ने भारत की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए उद्घोष करते हुए कहा—

मुक्ति युद्ध यह, मुक्ति चाहिए भू को युग के अनाचार से।
दैन्य अविद्या घृणा द्वेष से, भय संशय मिथ्या प्रचार से।।
मुक्ति शशि के अहंकार से, खल नृशंस के पद-प्रहार से।
मुक्ति पर्व यह, मुक्ति चाहिए, भौतिकता के अन्धकार से।।

7. असहयोग आन्दोलन—बापू के इस आह्वान पर सारा देश उनके पीछे चल पड़ा। छात्रों ने स्कूलों का बहिष्कार कर दिया। कितनों ने अपनी सरकारी नौकरियों से त्याग-पत्र दे दिया। सभी लोग हँस-हँसकर जाने लगे। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन तीव्रतर होता गया। गाँव-गाँव में असहयोग आन्दोलन की आग भड़क उठी। उधर अंग्रेजों का दमन-चक्र भी कम नहीं था। 'खेड़ा' ग्राम के किसानों को लगान न देने के कारण बे-घरबार कर दिया गया। लगभग एक दशक तक अंग्रेजों के साथ इसी प्रकार की खींचातानी चलती रही। अंग्रेज सत्याग्रहियों के दमन के लिए भाँति-भाँति के पैंतरे बदलते रहे। समझौते और संधियों के नाटक रचे गये किन्तु भारत अपने महान उद्देश्य से रंचमात्र भी नहीं डिगा।

8. 'सविनय अवज्ञा' आन्दोलन—इसी बीच बिहार का हृदयद्रावक भूकम्प आया। बंगाल में भीषण अकाल पड़ा। देश के इस अर्थ-संकट के समय भ्रष्टाचारियों को शोषण का और भी अवसर प्राप्त हुआ। फिर द्वितीय महायुद्ध छिड़ा। उसमें सहयोग के लिए कांग्रेस ने जो शर्तें ब्रिटिश सरकार के सामने रखीं उन्हें स्वीकार किया गया। परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस को सन् 1940 में व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर देना पड़ा। इसी समय रूस पर जर्मनी के आक्रमण के मध्य पूर्व एशिया में खतरा उपस्थित हो गया। बाध्य होकर भारतीय समस्याओं पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 'क्रिप्स मिशन' भेजा किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन करने का निश्चय हुआ।

9. 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन—8 अगस्त, 1942 को मुम्बई में कांग्रेस अधिवेशन समाप्त हुआ। वहीं दूसरे दिन सबेरे सभी नेताओं को जेल में बन्द कर दिया गया। बिना मार्गदर्शन के देश की जनता किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गई। अंग्रेजों ने लाठी-डण्डों के बल पर विद्रोह को दबाना चाहा किन्तु अब आग सुलग चुकी थी–

मिलें बन्द निःस्पंद हाट फड़, श्रमिकों ने हथियार त्याग कर।
किया प्रचण्ड विरोध दमन का, पौरों पद छोड़ निरन्तर।।
जलीं पुलिस चौकियाँ, डाकघर, तान, फोन के तार गये कट।
उलटी झट पटरियाँ रेल की, शासक की नाड़ियाँ गईं कट।।

10. बापू का आमरण अनशन और कस्तूरबा की मृत्यु—बापू को आमरण अनशन व्रत पर अटूट विश्वास था। उन्होंने आगा खाँ महल में देश में व्याप्त इन हिंसात्मक कार्यों के लिए प्रायश्चित स्वरूप अनशन प्रारम्भ कर दिया। बापू के इस अनशन ने विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। इसी बीच महादेव देसाई और कस्तूरबा गाँधी की मृत्यु हो गई। बापू को उनकी मृत्यु से घोर कष्ट हुआ। फिर बापू जेल से बाहर आये। देश के नेतागण मुक्त कर दिये गये। देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। बापू की जय-जयकार हुई।

11. भारतीय स्वतन्त्रता और देश का विभाजन, बापू की हत्या—उधर देश स्वतन्त्रता की खुशियों में लीन था। इधर देश-विभाजन के परिणामस्वरूप अंग्रेजों की कूटनीतिक चालों से देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़की। बापू ने उसके लिए मौन और उपवास व्रत किये और उसके लिए लोगों को समझाया कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता तो हमारा पहला चरण मात्र था। वास्तविक उद्देश्य तो इस पृथ्वी पर विश्व-बन्धुत्व की भावना का उदय करना है। पृथ्वी पर मानवीय प्रेम फैलाकर स्वर्ग को उतारना है; किन्तु लोगों के अचेतन

मन में रावण और कंस अभी जीवित रह गये थे। आकाश से वज्रपात हुआ। मनुष्य बनना तो दूर रहा, पृथ्वी पर रक्तवर्ण अन्धकार में ही हमारा सूर्य अस्त हो गया। बापू की हत्या कर दी गयी। इस प्रकार स्वतन्त्रता के इस मुक्तियज्ञ में वह स्वयं आहुति बन गये।

कथावस्तु की समीक्षा

'लोकायतन' सुमित्रानन्दन पन्त जी का श्रेष्ठ महाकाव्य है। 'मुक्तियज्ञ' इसी महाकाव्य का एक सरस अंश है। काव्य का विषय है—आधुनिककालीन अत्यन्त ज्वलन्त घटना। कवि का उद्देश्य देश की भावी पीढ़ी को स्वतन्त्रता के इतिहास से अवगत कराना है। पाठकों को गांधीदर्शन से परिचित कराना भी कवि का उद्देश्य रहा है। वास्तव में ये सब तो लघु उद्देश्य हैं। कवि का मुख्य उद्देश्य तो हिंसा पर अहिंसा की और असत्य पर सत्य की विजय दिखलाकर मानवता के प्रति आस्था जगाना है। वास्तव में भारतीय स्वतन्त्रता तो मुक्तियज्ञ का प्रथम चरण था, मुक्तियज्ञ की पूर्ति तो उस दिन होगी, जिस दिन मानव सम्पूर्ण विश्व को प्रेम के बन्धन में बांधकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की घोषणा करेगा। देश की मुक्ति के लिए चलाया गया यज्ञ भारतीय स्वतन्त्रता से पूर्णतया सम्बद्ध है। इसलिए खण्डकाव्य का शीर्षक सार्थक है।

'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु एक विशाल पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें सन् 1921 ई. से सन् 1947 ई. तक के स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का ऐतिहासिक चित्रण किया गया है। भारत के आधुनिक स्वतन्त्रता संग्राम की एक लम्बी अवधि के साथ ही इसमें द्वितीय विश्वयुद्ध, जापान पर गिराए गये परमाणु बमों आदि की घटनाओं का भी उल्लेख है। इसलिए व्यापकता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इसकी कथावस्तु किसी महाकाव्य में ही समाहित हो सकती थी, किन्तु कविवर पन्त ने अत्यन्त कुशलता से इस विशाल पृष्ठभूमि को छोटे-से खण्डकाव्य में समेट लिया है। खण्डकाव्य में इस बड़े कथानक के सिमटने के पश्चात् भी इसके क्षेत्र की व्यापकता का प्रभाव नहीं पड़ा है।

ऐतिहासिक स्वरूप—'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु का स्वरूप ऐतिहासिक है। इसमें कवि का दृष्टिकोण ऐतिहासिक घटनाओं का यथावत चित्र प्रस्तुत करना है, जिसके कारण इसमें काव्योचित कल्पना को विशेष स्थान नहीं प्राप्त हुआ।

प्रथम काव्यात्मक कथा—'मुक्तियज्ञ' से पूर्व हिन्दी में जितने भी खण्डकाव्य लिखे गए, उनकी कथावस्तु इतिहास एवं पुराणों से ही गई थी। यद्यपि इन खण्डकाव्यों के रचयिताओं ने इनमें आधुनिक विचारधारा एवं दृष्टिकोण को भी स्थान दिया, तथापि इनकी कथाओं का आधार प्राचीन इतिहास एवं पुराणों से ही सम्बन्धित रहा। 'मुक्तियज्ञ' प्रथम खण्डकाव्य माना जाता है। इसमें कवि ने प्राचीन इतिहास और पौराणिक गाथाओं से हटकर आधुनिक इतिहास से सामग्री प्राप्त की है।

सरल अभिव्यक्ति—कवि ने इस खण्डकाव्य में किसी भी काव्यात्मक गुण, आलंकारिकता या प्रतीकात्मकता आदि की सहायता नहीं ली है। उन्होंने सरल प्रकार से ऐतिहासिक घटनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा हेतु उन्होंने सरलता का ध्यान रखा है और काव्यालंकार इत्यादि का प्रयोग त्यागकर इसे बोझिल होने से बचाया है।

भावात्मक सौन्दर्य—'मुक्तियज्ञ' एक विचार-प्रधान खण्डकाव्य है, जिसमें कवि भारतीय स्वतन्त्रता के लिए की गयी अहिंसात्मक लड़ाई का चित्रण करता है। पूरे खण्डकाव्य में गाँधी-दर्शन की ही विवेचना है, जो कवि के काव्य-कौशल के परिणामस्वरूप सरस और मनोरंजक है। उसमें चिन्तन की बोझिलता कहीं भी दिखलाई नहीं पड़ती। सत्य, अहिंसा, मानव-प्रेम, हरिजनोद्धार, नारी-जागरण, भारतीय कला, संस्कृति की रक्षा, आत्म-स्वातन्त्र्य, नशा-बन्दी, भौतिकता के विरुद्ध आध्यात्मिक आस्था की स्थापना आदि गाँधी-दर्शन के दुरूह चिन्तनों को कवि कथात्मक परिवेश में बड़ी ही सुन्दर और रोचक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। कवि पन्त सूक्ष्मतम भावों की अभिव्यक्ति के लिए पौराणिक अथवा ऐतिहासिक अन्तः कथाओं के प्रस्तुत आयोजन द्वारा सम्प्रेषणीयता को सरल और बोधगम्य बना सकने में सिद्धहस्त हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **[2016 SA, SB, SC, SD, SF, MG, 20 ZC, ZM, ZH, ZJ]**
2. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु की आधुनिकता पर प्रकाश डालिए।
3. खण्डकाव्य की दृष्टि से 'मुक्तियज्ञ' की समीक्षा कीजिए।
4. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी का भारत के लिए योगदान पर प्रकाश डालिए।
5. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

[2016 SE, 17MB, MC,MG, 19 CQ, CR, 20 ZA, ZB, ZF, ZG]

6. 'मुक्तियज्ञ' शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
7. 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
8. 'मुक्तियज्ञ' में प्रतिपादित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।
9. ''मुक्तियज्ञ' में वसुधैव कुटुम्बकम् की सुस्पष्ट झांकी मिलती है।'' स्पष्ट कीजिए।
10. ''मुक्तियज्ञ' में ऐतिहासिक तथ्यों की प्रधानता है।'' सिद्ध कीजिए।
11. सिद्ध कीजिए कि 'मुक्तियज्ञ' एक सफल खण्डकाव्य है।
12. कथावस्तु की दृष्टि से 'मुक्तियज्ञ' का मूल्यांकन कीजिए।
13. ''मुक्तियज्ञ' की राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति संकुचित नहीं है।'' स्पष्ट कीजिए।
14. ''मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य में गाँधी युग का स्वर्णिम इतिहास छिपा है।'' इसे संक्षेप में लिखिए।
15. 'मुक्तियज्ञ' के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SC, SD, SG, 17 MA, MC,MD, 18 AA, 19CO, CQ, CR, 20 ZA, ZB, ZC, ZD, ZF, ZE, ZG, ZH, ZM, ZN, ZJ**

●●

(2) सत्य की जीत

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

झाँसी, बदायूँ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत, लखनऊ, इटावा, बलिया, बिजनौर

कवि द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी द्वारा प्रणीत 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक महाभारत महाकाव्य के सभा पर्व से लिया गया है। इसमें द्रौपदी चीरहरण की घटना का प्रमुखता से उल्लेख है। इस अत्यन्त लघु खण्डकाव्य में कवि ने प्राचीनकथा को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

सत्य की जीत : कथावस्तु (सारांश)

'सत्य की जीत' द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा लिखित एक विचार-प्रधान खण्डकाव्य है, जिसकी कथावस्तु द्रौपदी के 'चीर-हरण' से सम्बन्धित है। द्रौपदी का चीर-हरण महाभारत की एक अत्यन्त लोकप्रिय एवं मार्मिक घटना है। इस कथा का आधार महाभारत के सभा-पर्व में दूत पर्व के 67वें अध्याय से 75वें अध्याय तक की कथा है। प्रस्तुत खण्डकाव्य का कथानक इस प्रकार है–

धर्मराज युधिष्ठिर दुर्योधन द्वारा आयोजित जुये में अपना सर्वस्व और स्वयं को हारने के पश्चात् द्रौपदी को हार जाते हैं। कौरव भरी सभा में द्रौपदी को लेकर निर्वस्त्र कर उसे अपमानित करना चाहते हैं। दुर्योधन दुःशासन से द्रौपदी को भरी सभा में लाने का आदेश देता है। दुःशासन द्रौपदी का केश खींचते हुए उसे भरी सभा में लाता है। द्रौपदी को यह अपमान असह्य हो जाता है। वह सिंहनी की भाँति दहाड़ती हुई दुःशासन को न्याय की चुनौती देती हुई सभा में उपस्थित होती है–

अरे! दुःशासन निर्लज्ज! देख तू नारी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान, कराऊँगी मैं उसका बोध।।
समझ कर एकाकी निःशंक, लिया मेरे केशों को खींच।
रक्त का घूँट पिये मैं मौन, आ गई भरी सभा के बीच।।

द्रौपदी की इस गर्जना से सभा में निस्तब्धता छा जाती है। खण्डकाव्य की कथा का प्रारम्भ बस यहीं से होता है। तदनन्तर द्रौपदी और दुःशासन में नारी-वर्ग पर पुरुष-वर्ग द्वारा किये गये अत्याचार, नारी और पुरुष की सामाजिक समता, उनकी शक्ति और उनके अधिकार, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, अस्त्र-शस्त्र आदि विविध विषयों पर अत्यन्त ही तर्क-संगत, प्रभावपूर्ण वाद-विवाद होते हैं। दुःशासन क्रोध से आग-बबूला हो उठता है और द्रौपदी से कहता है कि अब अधिक बकवास न करो, तुम्हें युधिष्ठिर हार चुका है। तुम्हें दासी की भाँति यहाँ रहना है। द्रौपदी पूछती है–

प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे, या कि ये गये स्वयं को हार।
स्वयं को यदि, तो उनको मुझे, हारने का क्या था अधिकार?

नहीं था यदि उनको अधिकार, हारने का मुझको तो व्यर्थ।
हो रहा क्यों यह वाद-विवाद, समझ पा रही नहीं मैं अर्थ।।

द्रौपदी के इस तर्क से सभासद प्रभावित होते हैं। द्रौपदी अपना पक्ष प्रस्तुत करती हुई आगे कहती है कि धर्मराज युधिष्ठिर सरल हृदय हैं। वे कौरवों की कुटिल चालों से छले गये हैं। अतः सभा में उपस्थित धर्मज्ञ अपना निर्णय दें कि उन्हें कपट और अधर्म की विजय स्वीकार है अथवा सत्य और धर्म की। दुःशासन शास्त्र-चर्चा को शस्त्र-बल से दबा देना चाहता है। वह कहता है–

धर्म क्या है औ, क्या है सत्य, मुझे क्षण भर चिन्ता इसकी न।
शास्त्र की चर्चा होती वहाँ, जहाँ नर होता शस्त्र विहीन।।
शस्त्र जो कहे वही है सत्य, शस्त्र जो करे वही है कर्म।
शस्त्र जो लिखे वही है शास्त्र , शस्त्र बल पर आधारित है धर्म।।

दुःशासन के इस तर्क को सुनकर भीम की भुजाएँ फड़कने लगती हैं। कौरव पक्ष का नीतिज्ञ विकर्ण भी शस्त्र-बल पर आधारित इस नीति-विवेचन का विरोध करता है। वह इस बात पर बल देता है कि द्रौपदी द्वारा उठाये गये प्रश्न पर सभा गम्भीरतापूर्वक विचार करे तथा धर्म और न्याय-संगत निर्णय होना चाहिए।

कौरव पक्ष को विकर्ण के ये विचार स्वीकार नहीं हैं। वह अपने हठ पर अडिग है। युधिष्ठिर अपने उत्तरीय वस्त्र उतार देते हैं। उनकी देखा-देखी सभी पाण्डव अपने वस्त्र उतार देते हैं। विदुर और विकर्ण उदास हो जाते हैं। दुःशासन अट्टहास करता है। द्रौपदी मर्यादा का ध्यान रखते हुए सब कुछ चुपचाप देखती रहती है। जब सभासदों की ओर से कोई निर्णय नहीं होता, तो दुःशासन द्रौपदी को निर्वस्त्र करने के लिए हाथ आगे बढ़ता है। द्रौपदी उसे पापी कहकर डाँट देती है और कहती है कि भले ही यह शरीर चला जाय, किन्तु इस शरीर से कभी वस्त्र नहीं उतर सकता। यहाँ पर जो अन्याय हो रहा है, मैं उसे सहन नहीं कर सकती। सभासदों की राय बिल्कुल ही ऐसी नहीं है। यहाँ तो न्याय का मुँह बन्द है। यह शक्ति पर आधारित एकपक्षीय न्याय है। मैं सत्य, न्याय और धर्म का पक्ष लेकर चल रही हूँ। मुझे देखना है कि कौन मुझ पर हाथ उठाता है? दुःशासन द्रौपदी का चीर खींचने के लिए आगे बढ़ता है, किन्तु अनुपम तेजोप्त रूप में द्रौपदी उसे साक्षात् दुर्गा-सी प्रतीत होती है। वह काँप उठता है और चीर खींचने में अपने को असमर्थ पाता है।

द्रौपदी कौरवों को पुनः ललकारती है। सभी सभासद कौरवों की निन्दा करते हैं तथा द्रौपदी के सत्य और न्यायपूर्ण पक्ष की प्रशंसा करते हैं। अन्त में धृतराष्ट्र पाण्डवों को मुक्त करने तथा उनका राज्य वापस करने का आदेश देते हैं। द्रौपदी के विचारों का समर्थन करते हुए सत्य, न्याय और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए वे लोक-कल्याण को ही मानव-जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं। वे पाण्डवों के प्रति अपनी शुभकामना प्रकट करते हैं।

कथावस्तु का काव्य सौन्दर्य

कविवर द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी द्वारा रचित खण्डकाव्य 'सत्य की जीत' की कथा-संगठन एवं उसके रचना-शिल्प के अनुसार प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. भावात्मक सौन्दर्य–(अ) विचार वैशिष्ट्य–प्रस्तुत खण्डकाव्य में न तो कथानक की प्रधानता है और न किसी घटना-विशेष की। यह द्रौपदी के चीर-हरण के अवसर पर सभा में व्यक्त किये गये पक्ष और विपक्ष के तर्कों का प्रस्तुतीकरण है—बस इतना ही खण्ड-काव्य का वर्ण्य-विषय है। इस दृष्टि से खण्डकाव्य को विचार-प्रधान मानना ही न्याय-संगत होगा। 'सत्य की जीत' नामक खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने निम्न बिन्दुओं पर चिन्तन व्यक्त किया है—

(ब) नारी-जागरण–आधुनिक युग नारी-जागरण का युग है। कवि ने द्रौपदी के माध्यम से आधुनिक युग की प्रगतिशील नारी को अभिव्यक्ति प्रदान की है। दुःशासन के वाद-विवाद करते समय द्रौपदी ने नारी की शक्ति के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किया है, वह निश्चय ही खण्डकाव्य की विचार-मौलिकता का परिचायक है। कवि के अनुसार आज की नारी 'अबला' नहीं 'सबला' है। श्रृंगार की मूर्ति नहीं है। समय आने पर संहारकारिणी भैरवि का रूप भी धारण कर सकती है—

परिस्थितियों की हो यदि माँग, वहीं कलिका कोमल सुकुमार।
धार सकती भैरवि सर्व, पापियों का करने संहार।।

(स) निःशस्त्रीकरण–आज विश्व में शस्त्रों के निर्माण की जो होड़ लगी है, उसके पीछे राष्ट्रनायकों की विस्तारवादी मनोवृत्तियों का कुचक्र काम कर रहा है। प्रस्तुत खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने शस्त्रीकरण और निःशस्त्रीकरण दोनों पक्षों पर तर्क प्रस्तुत कराकर विकर्ण के माध्यम से निःशस्त्रीकरण की उपयोगिता को सिद्ध किया है। आज के युग के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों की आवश्यकता पहले है; क्योंकि अभी विश्व से दानवता का उन्मूलन नहीं हो सका है।

(द) मानवीय मूल्यों की स्थापना—भौतिकता से आक्रान्त आज के युग को मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थावान बनने का संकेत खण्डकाव्य की तीसरी विशेषता है। धृतराष्ट्र इसी सहअस्तित्व की भावना का सन्देश अपने कथन में देते हैं—

छीन कर औरों का अधिकार न कोई बने यहाँ बलवान।
भूमि-जन-नभ पावक और पवन, सभी हो सबको सुलभ समान।।

सच्चे सांस्कृतिक विकास के लिए, लोक-कल्याण के लिए, जीवन में सत्य, न्याय, प्रेम, करुणा, शील, क्षमा, सहानुभूति, श्रद्धा और सेवा आदि की नितान्त आवश्यकता है। इन्हीं की मान्यताओं पर आधारित प्रगति में स्थिरता होगी।

(न) रस-निरूपण—'सत्य की जीत' मुख्यतः 'वीर-रस' प्रधान काव्य है। इसमें द्रौपदी को एक आर्त अबला नारी के रूप में चित्रित नहीं किया गया है। यहाँ द्रौपदी एक वीरांगनी क्षत्राणी है, जो अपने को पुरुषों के समकक्ष मानकर सत्य और न्याय की माँग दृढ़तापूर्वक कर रही है। सत्य, धर्म और न्याय के प्रति द्रौपदी में इतना आत्मविश्वास है कि वह शस्त्र-बल की चिन्ता किये बिना दुःशासन तथा कौरवों को सीधे ललकार रही है—

खींच दुःशासन यदि हो शक्ति, चुनौती मेरी तुमको आज।
देख ले युद्ध धर्म का औ, अधर्म का सारा विश्व समाज।।
तुम्हीं क्या जग की कोई शक्ति, न कर सकती मेरी अपमान।
भले ही संकट मुझ पर आज, किन्तु अन्तर मेरा बलवान।।

स्थान-स्थान पर रौद्र रस का भी बड़ा सुन्दर परिपाक हुआ है।

2. कलात्मक सौन्दर्य—(क) भाषा-शैली—अपनी प्रबुद्ध विचारधारा को अधिकाधिक सम्प्रेषणीयता प्रदान करने के लिए कवि ने खण्डकाव्य की भाषा अत्यन्त ही सरल, प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली को अपनाया है, जिसमें ओज और प्रसाद गुणों की प्रधानता है। भाषा में अलंकरण और कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है, किन्तु उसमें नाटकीयता के साथ-साथ प्रवाह है। शैली संवादात्मक है। पूरा खण्डकाव्य ही ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न पात्रों के कथोपकथन से भरा हुआ नाटक हो। संवादों में प्रभावशीलता एवं स्वाभाविकता है।

(ख) छन्द और अलंकार—प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि घटनाओं और परिस्थितियों के अनुसार छन्दों में परिवर्तन करता चलता है, जिससे कथा प्रवाह और चित्रोपमता में बड़ी सहायता मिलती है।

कवि की ओर से अलंकारों का विशेष आग्रह नहीं है फिर भी अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकार स्वाभाविक रूप से काव्य में आ गये हैं।

(ग) बिम्ब-योजना—कवि ने 'सत्य की जीत' नामक खण्डकाव्य में बड़ी ही सजीवता पर चित्रोपमता से, बिम्ब-योजनाओं का प्रस्तुतीकरण किया है। पाठकों के समक्ष सभा का सारा दृश्य ही सजीव हो उठता है। द्रौपदी के रौद्र रूप का चित्रण देखिए–

और वह मुख प्रज्ज्वलित प्रचंड, अग्नि का खण्ड स्फुलिंग का कोष।
प्रलय के सहस्रांश की भाँति, कठिन था सहना उसका रोष।।

कथावस्तु की समीक्षा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में काव्य-संगठन एवं उसके रचना-शिल्प के अनुसार निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

प्रसिद्ध पौराणिक घटना पर आधारित कथावस्तु—कथावस्तु मूलतः द्रौपदी के चीर-हरण की पौराणिक कथा पर आधारित है। यह मार्मिक प्रसंग सभी युगों में विद्वानों द्वारा निन्दा का विषय रहा है। तत्कालीन युग में विदुर ने नारी के इस अपमान को भीषण विनाश का पूर्व संकेत माना था। समालोचकों के अनुसार 'महाभारत' के युद्ध का कारण भी प्रमुख रूप से यही था। कवि ने इसी मार्मिक घटना को अपने खण्डकाव्य की कथावस्तु बनाया है।

कथावस्तु का गागर में सागर होना—'सत्य की जीत' का कथा-प्रसंग छोटा है। कवि ने द्रौपदी के चीरहरण के प्रसंग पर अपने खण्डकाव्य की कथा की वस्तु-योजना की है। इस छोटी-सी घटना को लेकर कवि ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में विशद् वस्तु-योजना की है, जिसमें महाभारत-काल के साथ-साथ वर्तमान युग के समाज की विसंगतियों के प्रति आक्रोश दिखाई देता है।

कथा-संगठन—'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में कवि ने संवादों के माध्यम से कथा का संगठन किया है। कवि ने वातावरण, मनोवेग, आक्रोश आदि की अभिव्यक्ति इन्हीं संवादों द्वारा की है, जो अपनी व्यंजना में पूर्णतया सफल रहे हैं। कथावस्तु में केवल राजसभा का एक दृश्य सामने आया है, किन्तु नाटकीय आरम्भ एवं कौतूहलपूर्ण मोड़ों से गुजरती हुई कथावस्तु स्वाभाविक रूप में अपनी सीमा की ओर बढ़ी है।

संवाद-योजना—प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथावस्तु में संवाद-योजना का उपयोग इतनी कुशलता से किया गया है कि इसमें

नाटकीय एवं चित्रोपम सौन्दर्य की छटा के दर्शन होते हैं। इसमें साहित्य की श्रव्य एवं दृश्य दोनों प्रकार की विशेषताओं का समावेश है।

मौलिकता—खण्डकाव्य 'सत्य की जीत' के कथा प्रसंग में कवि ने मौलिक परिवर्तन भी किए हैं। वे द्रौपदी के चीर-हरण के समय वस्त्र को श्रीकृष्ण द्वारा बढ़ाया जाता हुआ न दिखाकर स्वयं द्रौपदी को ही आत्मबल के प्रयोग से दुःशासन को रोकते हुए दिखाते हैं। द्रौपदी का पक्ष सत्य का पक्ष है और सत्य के साथ ईश्वरीय शक्ति से प्राप्त आत्मबल एवं दृढ़ता का कवच होता है। महाभारत प्रसंग में वर्णित कृष्ण द्वारा की गई चीर-वृद्धि को कवि ने इस दार्शनिक सत्य के माध्यम से एक मौलिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पात्रों का चयन—कवि ने इस खण्डकाव्य की कथा-योजना में महाभारतकालीन उन्हीं प्रमुख पात्रों को लिया है, जिनका द्रौपदी के चीरहरण प्रसंग में उपयोग किया जा सकता था। नवीनता यह है कि इन पात्रों में श्रीकृष्ण को किसी भी रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। प्रमुख पात्र द्रौपदी एवं दुःशासन हैं। अन्य पात्रों का उल्लेख वातावरण एवं प्रसंग को उद्दीपन प्रदान करने के लिए हुआ है। पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविक है।

देश-काल एवं वातावरण—इस खण्डकाव्य में महाभारतकालीन देश-काल एवं वातावरण का अनुभव अत्यन्त कुशलता से कराया गया है। दृश्य तो एक ही है, किन्तु पात्रों के संवाद एवं उनकी छवि के अंकन से इस देश-काल एवं वातावरण का पूर्ण स्वरूप सामने दिखाई देता है।

उद्देश्य—कवि का उद्देय प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा के द्वारा नारी-जागरण एवं शस्त्रों के भण्डारण के विरुद्ध मानवतावादी भावना को स्वर देना है। राष्ट्र या नैतिक मूल्यों की स्थापना भी इस खण्डकाव्य की कथावस्तु का उद्देश्य है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु (कथानक) लिखिए। **[2016 SD, SE, 19 CC, 20 ZH, ZJ, ZM, ZN]**
2. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए। **[2019 CN, CO, CR, 20 ZC, ZD, ZE, ZG]**
3. 'सत्य की जीत' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि नारी अबला नहीं शक्तिस्वरूपा है।
4. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **[2020 ZA, ZB]**
5. 'सत्य की जीत' में व्यक्त नारी-विषयक विचारधारा पर प्रकाश डालिए।
6. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में द्रौपदी का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SD, 17 MC, MF, MG, 19 CP]**
7. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की किसी घटना पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. द्रौपदी का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2019 CM, CN, 20 ZA, ZB, ZC, ZG, ZH, ZN]**
9. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2020 ZF, ZE, ZJ]**
10. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर धृतराष्ट्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।
11. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के मार्मिक स्थलों का अपने शब्दों में विवेचन कीजिए।
12. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर दुःशासन के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। **[2020 ZD, ZM]**

(3) रश्मिरथी

रामधारीसिंह 'दिनकर'

वाराणसी, बुलन्दशहर, मथुरा, मुजफ्फरनगर, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया

रश्मिरथी : कथावस्तु (सारांश)

'रश्मिरथी' नामक खण्डकाव्य का कथानक सात सर्गों में विभक्त है, जिसका सारांश इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग—कर्ण का शौर्य-प्रदर्शन— प्रथम प्रथम सर्ग में कर्ण राजकुमारों को प्रतिद्वन्द्विता के लिए चुनौती देता है और अपनी

शस्त्र-कलाओं से अर्जुन, द्रोण तथा भीष्म आदि को आश्चर्यचकित कर देता है। फिर द्वन्द्व-युद्ध के लिए अर्जुन को ललकारता है। कृपाचार्य कहते हैं कि अर्जुन राजकुमार है, वह सूतपुत्र कर्ण से नहीं लड़ेगा। कर्ण अपमान का घूँट पीकर रह जाता है। दुर्योधन परिस्थिति से लाभ उठाता है। वह कहता है कि शूरों और नदियों का मूल जानना आवश्यक नहीं होता है। जाति-पाँति का नारा केवल कायर और क्रूर लोग लगाया करते हैं। कर्ण भले ही सूतपुत्र हो, भले वह भंगी अथवा चमार हो किन्तु आज उसके आगे सभी राजकुमार फीके हैं। ऐसे बहुमूल्य रत्न का अपमान उचित नहीं है। यदि बिना राज्य के इसे वीरता का अधिकार नहीं है तो मैं अंगदेश का मुकुट इसके मस्तक पर रख रहा हूँ।

दुर्योधन के इस व्यवहार से कर्ण गद्‌गद हो जाता है और कृतज्ञता के बोझ से दबा हुआ कहता है—

भरी सभा के बीच आज, तूने जो मान दिया है।
पहले पहल मुझे जीवन में, जो उत्थान दिया है।।
उऋण भला होऊँगा उससे, चुका कौन सा दाम।
कृपा करे दिनमान, कि आऊं तेरे कोई काम।।

उधर द्रोणाचार्य को कर्ण के शौर्य पर चिन्ता हो जाती है। वे अर्जुन को सजग करते हैं और कर्ण को शिष्य न बनाने का निश्चय करते हैं। फिर भी रंग-भूमि से शंख बजाते हुए कर्ण को साथ लिये कौरव चले जाते हैं। रानियाँ राजमहल चली जाती हैं। सबसे पीछे मन-मसोसती कुन्ती जाती है—

और हाय! रनिवास चला, वापस जब राजभवन को।
सबसे पीछे चली एक, विकला मसोसती मन को।।
उजड़ गये हों स्वप्न, कि जैसी हार गई हो दाँव।
नहीं उठाये भी उठ पाते, थे कुन्ती के पाँव।

द्वितीय सर्ग : आश्रमवास—द्रोणाचार्य द्वारा धनुर्विद्या न सिखाये जाने का आभास होने पर कर्ण द्रोणाचार्य के गुरु परशुराम के आश्रम में गया, जहाँ परशुराम ने कवच और कुण्डल के कारण ब्राह्मण-कुमार समझा और उसे अपना शिष्य बना लिया।

एक दिन वे कर्ण की जंघा पर अपना मस्तक रखकर सो रहे थे। कर्ण गुरु के इस वात्सल्य भाव से भीगा चिन्तन में डूबा हुआ था, तभी एक जहरीला कीड़ा कर्ण की जांघ में काटने लगा। गुरु की निद्रा भंग न हो इसलिए कर्ण हिला-डुला तक नहीं, किन्तु रक्त की गर्म धारा के स्पर्श होते ही परशुराम जाग पड़े। कर्ण की सहनशीलता देखकर उन्हें उसके क्षत्रिय होने का सन्देह हुआ। वे क्रोधित गम्भीर स्वर में बोले—"तू अवश्य ही क्षत्रिय या किसी अन्य जाति का है।" कर्ण द्वारा स्वयं को सूत-पुत्र (शुद्र पुत्र) स्वीकार कर लेने पर भी उनका क्रोध कम नहीं हुआ और कर्ण को शाप दिया कि "मेरे द्वारा सिखायी गयी ब्रह्मास्त्र विद्या तू अन्त में भूल जायेगा।" यह सुनते ही कर्ण विकल हो उठा। उसकी व्याकुलता देख परशुराम ने वरदान दिया कि तू संसार में महान कहलायेगा तथा भारतवर्ष का इतिहास तेरी गौरव-गाथा गायेगा।

तृतीय सर्ग : कृष्ण सन्देश—श्रीकृष्ण पाण्डवों के दूत बनकर सन्धि का प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाते हैं। दुर्योधन पाण्डवों को केवल पाँच गाँव भी देने को तैयार नहीं होता, बल्कि उल्टे श्रीकृष्ण को भी बन्दी बना लेना चाहता है। श्रीकृष्ण अपने विराट् रूप का प्रदर्शन करते हैं। सर्वत्र आतंक व्याप्त हो जाता है। श्रीकृष्ण यहाँ से वापस होते समय कर्ण को साथ लाते हैं और उसे समझाते हैं कि तुम्हारे ही बल पर दुर्योधन युद्ध ठान रहा है।

चतुर्थ सर्ग : कर्ण के महादान की कथा—खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग में कर्ण की दानवीरता का बड़ा ही भव्य चित्रण प्रस्तुत किया गया है। कर्ण की दानवीरता का अनुचित लाभ उठाकर इन्द्र अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से उसके कुण्डल और कवच को माँग लेते हैं। कर्ण इस छल को भली-भाँति समझता है, किन्तु वह सब कुछ जानते हुए भी अपना अन्तिम सुरक्षा कवच दान में देता है। कर्ण छल-छद्म भरी गन्दी कूटनीति पर विश्वास नहीं रखता। वह दूसरों के कपट का उत्तर विशाल उदारता से देता है। कर्ण के इस निर्णय को सुनकर वे ग्लानि से झुक जाते हैं। कर्ण यश की आकांक्षा से ही दान नहीं देता बल्कि वह धन की निरर्थकता को बहुत गहराई तक समझता है। उसने अपने बचपन को साधारण गरीबी के बीच बिताया है। वह उसकी विपन्नता का साक्षी है, राजपद पाने पर भी उसमें दम्भ नहीं है। वह दान देने के लिए ही धन अर्जित करता है।

पंचम सर्ग : माता की विनती— पाँचवें सर्ग में कुन्ती स्वयं कर्ण के पास दुर्योधन का दल छोड़कर पाण्डवों का पक्षधर बनने का आग्रह करने के लिए आती है। कर्ण के लिए यह विकट परीक्षा की घड़ी है। जिस माता ने लोक-लज्जा के कारण उसे जल में बहा दिया था, वही आज अपना मातृत्व का अधिकार जताकर उसे दुर्योधन से अलग करने आ रही है। कर्ण के सारे अपमान, कुण्ठा, ग्लानि और कलंक का एक मात्र कारण यही माँ कुन्ती है, जो आज उसके सामने प्रार्थना और याचना की मुद्रा में खड़ी है। कर्ण बड़ी दृढ़ता से

इस भावात्मक आघात को झेल लेता है कि भले ही कृष्ण अर्जुन का साथ छोड़ दें, किन्तु वह दुर्योधन का साथ छोड़कर विश्वासघाती नहीं बनेगा। कुन्ती को भी वह खाली हाथ नहीं लौटाता। कर्ण कुन्ती को आश्वासन देता है कि वह अर्जुन को छोड़कर शेष चारों भाइयों की रक्षा करेगा और इस प्रकार उसे लेकर कुन्ती के पाँच पुत्र बराबर बने रहेंगे। कर्ण माता कुन्ती के चरण छूकर उन्हें विदा करता है।

षष्ठम सर्ग : शक्ति परीक्षण—षड्यन्त्रों, परीक्षाओं और प्रलोभनों के बीच से अपने को बचाता हुआ अपने निश्चय पर अडिग रहकर कर्ण रणक्षेत्र में उतरता है। यद्यपि शर-शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह उसे एक बार फिर युद्ध से विरत होने की सलाह देते हैं, किन्तु कर्ण विनम्रतापूर्वक उनकी इस सलाह को अस्वीकार कर देता है और कहता है कि अब युद्ध-भूमि के निर्णय के अतिरिक्त अन्य कोई निर्णय सम्भव नहीं है। छठे सर्ग की कथा में कवि का उद्देश्य कर्ण के इसी अद्भुत शौर्य का बखान करना है। श्रीकृष्ण की कूटनीति से प्रेरित घटोत्कच के संहार के लिए कर्ण को इन्द्र द्वारा प्राप्त एकाघ्नी बाण भी छोड़ देना पड़ता है। यद्यपि घटोत्कच मर जाता है और कर्ण विजयी हो जाता है, किन्तु विजयी होने पर भी एकाघ्नी बाण के अभाव में चिन्तित हो जाता है।

सप्तम सर्ग : कर्ण के बलिदान की कथा—सातवें सर्ग में कर्ण के आत्मोसर्ग की कथा है। यद्यपि नीति की दुहाई दोनों पक्ष देते हैं, किन्तु युद्ध-काल में नैतिक घोषणाएँ ताक पर धरी रह जाती हैं, क्योंकि युद्ध का अपना तर्क होता है। कर्ण-जैसा योद्धा भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है कि युद्ध में विजयी होने के लिए युद्ध-कौशल के साथ-साथ एक अलग प्रकार की कूटनीति भी आवश्यक है। फिर भी ऐसी कूटनीति कर्ण को स्वीकार नहीं है। कर्ण अपने चरित्र द्वारा युद्ध की इसी अनैतिकता और अनर्गलता की ओर संकेत करता है; किन्तु युद्ध से विरत होकर नहीं, बल्कि शामिल होकर। कर्ण का बलिदान पाण्डव पक्ष के लिए महान आश्चर्य है।

कथावस्तु की समीक्षा

(क) भाव-सौन्दर्य—

1. वर्ण्य-विषय—खण्डकाव्य की दृष्टि से 'रश्मिरथी' एक अत्यन्त ही सफल कृति है। आधुनिक युग मानवतावाद का युग है जहाँ व्यक्ति को समस्त जड़ परम्पराओं, बासी जीवन-मूल्यों, विवेकहीन नैतिक मान्यताओं तथा धार्मिक अन्धविश्वासों से ऊपर स्थान दिया जाता है।

'रश्मिरथी' का कर्ण उन व्यक्तियों का प्रतीक है, जो वर्ण-व्यवस्था को अमानवीय क्रूरता एवं जड़ नैतिक मान्यताओं की विभीषिका के शिकार हैं। आधुनिक युग की यह एक ज्वलन्त समस्या है, जहाँ कुल और जाति व्यक्ति के विकास के बाधक अथवा साधक बन जाते हैं। वर्ण-व्यवस्था से जर्जरित भारतीय समाज में योग्य और कर्मठ व्यक्तियों की उपेक्षा आम बात है। कर्ण ऐसे ही उपेक्षित और पीड़ित जनों का आदर्श है।

पात्रों के मनोभावों के अंकन में, मार्मिक स्थानों के निर्माण में 'दिनकर' विश्व के श्रेष्ठ कवियों में अपना स्थान रखते हैं। यद्यपि 'रश्मिरथी' में ऐसे मार्मिक स्थल बहुत ही थोड़े हैं, किन्तु जो भी हैं काव्य-जगत में दुर्लभ ही हैं। पंचम सर्ग में कर्ण-कुन्ती प्रसंग अपनी मार्मिकता में बेजोड़ है। इसमें दिनकर ने क्रूर-व्यवस्था के शिकार दो अभागे प्राणियों—'कर्ण' और 'कुन्ती' की मर्मवेदना का सफल उद्घाटन किया है। इसी प्रकार परशुराम के मन के द्वन्द्व और कर्ण के प्रति स्नेह से उत्पन्न उनकी अन्तर्व्यथा को कवि ने दूसरे सर्ग में बड़ी सफलता से संजोया है।

इस प्रकार 'रश्मिरथी' के माध्यम से 'दिनकर' ने अपने युग की व्यथा को वाणी देने का एक बड़ा ही सुन्दर काव्यात्मक प्रयास किया है, जिससे भारत का असहाय पिछड़ा वर्ग और वे सभी लोग जो आज की क्रूर जाति-व्यवस्था के शिकार हैं, इस सामाजिक विषमता की पीड़ा और दंश को महसूस करते हैं और 'रश्मिरथी' में उसे पाकर तृप्त तथा भाव-विभोर होते हैं।

2. रस-निरूपण—'रश्मिरथी' वीर रस-प्रधान खण्डकाव्य है, किन्तु यत्र-तत्र करुण और वात्सल्य रस का भी समावेश हुआ है। कर्ण और कुन्ती-प्रसंग में वात्सल्य रस का बड़ा ही सुन्दर परिपाक हुआ है—

मेरे ही सुत मेरे सुत को ही मारें।
हो क्रुद्ध परस्पर ही प्रतिशोध उतारें।।
यह विकट दृश्य मुझसे न सहा जायेगा।
अब और न मुझसे मूक रहा जायेगा।।

कर्ण के कथन में करुण रस का परिपाक देखिए—

पर हाय हुआ ऐसा क्यों बाम विधाता।
मुझे और पुत्र की मिली भीरु क्यों माता।

जो जनकर पत्थर हुई जाति के भय से।
सम्बन्ध तोड़ भागी दुधमुँहे तनय से।।

इस प्रकार जब कुन्ती कर्ण से यह कहती है कि ''बेटा, धरती पर बड़ी दीन है नारी, अबला होती सचमुच योषिता कुमारी'' तो नारी की सारी विशेषताएँ व दशाएँ एक साथ ही आर्तनाद करती हुई करुणा से आप्लावित हो उठती हैं।

(ख) कलात्मक सौन्दर्य

1. प्रकृति-चित्रण—वर्णन के क्रम से 'रश्मिरथी' में प्रकृति और पात्रों के सौन्दर्य का वर्णन अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। 'रश्मिरथी' में यद्यपि प्रकृति-चित्रण का विषय नहीं है, किन्तु पात्रों के परिवेश में यत्र-तत्र उनका वर्णन आ जाता है।

2. भाषा-शैली—खण्डकाव्य की भाषा में तद्भव शब्दों की प्रधानता है, किन्तु पौराणिक इतिवृत्त पर आधारित होने के कारण संस्कृत के तत्सम शब्दों का बिल्कुल ही बहिष्कार नहीं किया जा सका। युद्ध की घटनाओं तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को स्वाभाविक रूप देने के लिए पुरानी शब्दावली का यथासम्भव प्रयोग किया गया है। कुल मिलाकर भाषा में काफी निखार और कसाव है। भाषा तत्सम शब्दों के बोझ से सर्वथा मुक्त और विचार तथा भावों को वहन करने में सर्वथा समर्थ है। भाषा में सूक्तिपरकता भी है, जिसके कारण अभिव्यक्ति में सुनियोजित संक्षिप्तता के दर्शन होते हैं।

खण्डकाव्य काव्यात्मक संवाद-शैली में लिखा गया है। प्रायः प्रत्येक सर्ग में कवि ने संवादात्मक परिस्थितियों को सफलतापूर्वक उरेहने का प्रयास किया है। कर्ण का कृपाचार्य, कृष्ण, इन्द्र, कुन्ती, भीष्म इन सभी से संवाद चलता है। संवादात्मक शैली का प्रयोग करके कवि ने काव्य में नाटकीयता का समावेश किया है।

3. छन्द और अलंकार—अलंकारों के प्रति कवि का विशेष आग्रह नहीं है। यत्र-तत्र स्वाभाविक रूप से अलंकार आ गये हैं, जिनमें सहजता एवं संक्षिप्तता है। प्रत्येक सर्ग में अलग-अलग छन्दों का प्रयोग हुआ है। छन्दों का यह परिवर्तन विषय और मानसिक परिस्थितियों तथा संवेदनात्मक पकड़ को ध्यान में रखकर किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में दीजिए। **[2016 SC, SD, SF, 20 ZA, ZH]**
2. 'रश्मिरथी' में कथातत्त्व का सुंदर निर्वाह हुआ है। इस युक्ति के प्रकाश में अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. 'रश्मिरथी' के कथानक में ऐतिहासिकता और धार्मिकता दोनों है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।
4. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZB, ZG]**
5. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। **[2020 ZF, ZE]**
6. 'रश्मिरथी' के नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SA, 17 MA, 19 CN, 20 ZC, ZD, ZE, ZF, ZG]**
7. 'रश्मिरथी' के आधार पर कर्ण की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[2019 CO, CQ, 20 ZB, ZN]**
8. भाषा-शैली के विचार से 'रश्मिरथी' का मूल्यांकन कीजिए।
9. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में प्रस्तुत श्रीकृष्ण के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। **[2020 ZA, ZM, ZJ]**
10. 'रश्मिरथी' के आधार पर प्रधान नारी पात्र कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SC, 17 MB, 20 ZH]**

(4) आलोक-वृत्त

(गुलाब खण्डेलवाल)

प्रयागराज, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर

कविवर गुलाब खण्डेलवाल ने आलोकवृत्त खण्डकाव्य की रचना की है। आठ सर्गों में विभाजित इस खण्डकाव्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन को चित्रित किया गया है।

आलोक-वृत्त : कथावस्तु (सारांश)

'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य की कथा गाँधी जी के जन्म से लेकर स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक की ऐतिहासिक कथा है। इस कथा को आठ सर्गों में विभाजित किया गया है। कथा इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग : भारत का अतीत–कवि भारत के स्वर्णिम अतीत का वर्णन कर तत्कालीन भारत की दशा का वर्णन करता है। इसमें नयी मानवता का जयघोष किया है और गुलाम भारत के जागरण की आवाज ऊँची की है। देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था। स्वतन्त्रता की प्रथम क्रान्ति के ठीक बारह वर्ष पश्चात् गुजरात प्रदेश के पोरबन्दर नामक स्थान पर महात्मा गाँधी का जन्म हुआ। गाँधी जी के जन्म के साथ ही प्रथम सर्ग समाप्त हो जाता है।

द्वितीय सर्ग : गाँधी जी का प्रारम्भिक जीवन–खण्डकाव्य की कथा दूसरे सर्ग से प्रारम्भ होती है। मोहनदास करमचन्द गाँधी के मन में 'गोरे शासन' के विरुद्ध बचपन से ही चिन्ता व्याप्त हो जाती है। अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए वे अपने को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं और इसके लिए वे मांसाहार करने की सोचते हैं। घर से पैसे चुरा-चुराकर चोरी-चोरी मांस खाया करते हैं, किन्तु झूठ और चोरी से वे मन-ही-मन लज्जित होते हैं। फिर अपने रोगी पिता को पत्र लिखकर अपनी कमजोरियों के लिए क्षमा-याचना करते हैं। पिता पुत्र की सच्चाई पर गद्गद होकर छाती से लगा लेते हैं।

समय बीतता है। उनकी शादी कस्तूरबा के साथ होती है। मानवीय दुर्बलताओं से प्रेरित बापू भी कस्तूरबा के प्रति आसक्त हो जाते हैं और इसी समय रोग-शैय्या पर पड़े पिता की मृत्यु हो जाती है। बापू को इसका आघात पहुँचता है और वे आत्मचिन्तन व पश्चाताप करते हैं। पुरानी परम्पराओं को तोड़कर उच्च शिक्षा के लिए बापू अपनी माता पुतली बाई से आज्ञा लेकर विदेश जाते हैं और वहाँ अपनी माता को दिये गये वचन के अनुसार वे बराबर 'मद्य, मांस, मदिरादि' से बचते हैं। एक बार पोर्ट स्मिथ शाकाहारी सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में एक कलुषित स्थान पर पहुँच जाते हैं, जहाँ भगवान की कृपा से पथभ्रष्ट होते-होते बच जाते हैं। अध्ययन समाप्त करके बापू स्वदेश लौटते हैं; किन्तु माता पुतली बाई का देहान्त हो चुका रहता है। वह माता के लिए व्याकुल हो उठते हैं। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उनको माता आकाश से कह रही हों–

दुःखी न होना पुत्र न मिल पाऊँ धरती पर मैं।
सौंप गयी हूँ तुझको एक बड़ी माता के कर में।।
कोटि-कोटि पुत्रों के रहते, भी वंध्या सी होती।
माता वह जंजीरों में जकड़ी, सदियों से रोती।।

बापू देश-सेवा का व्रत ले लेते हैं।

तृतीय सर्ग : अफ्रीका प्रवास–बापू अफ्रीका जाते हैं। वहाँ एक गोरा यात्री जाड़े की रात में प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बापू को बाहर निकाल देता है। वे रात भर प्लेटफार्म पर ठिठुरते हैं और भारतवासियों की हीनावस्था के सम्बन्ध में चिन्तन करते हैं–

आत्मा बँटी विचार बँटे, बँट गयी जातियाँ दल में।
मानवता बँध गयी इसी मिथ्याभिमान से छल में।।
रंग देखकर ही तन का क्या वह लघु महत् बनाता।
नहीं मनुज ही अपमानित हो रहा मनुज निर्माता।।

बापू विचार-मन्थन करके 'अहिंसा' को 'हिंसा' से शक्तिशाली मानते हैं। वे निश्चय करते हैं कि प्रेम और अहिंसा द्वारा मैं शत्रुओं का हृदय परिवर्तित करूँगा। पाशविक शक्तियों के आगे आत्मशक्ति को जगाऊँगा। इसमें कठिनाई आने पर भले ही मुझे सूली पर चढ़ना पड़े। हृदय-मन्थन के परिणामस्वरूप महात्मा गाँधी को जो अहिंसात्मक प्रतिकार का मार्ग सूझता है, वही बाद में 'सत्याग्रह' नाम से अभिहित होता है। बापू दक्षिणी अफ्रीका में हजारों सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हैं। कवि अन्त में सत्याग्रह के महत्त्व को बतलाता है–

सत्याग्रह के शब्द-कोष में शब्द नहीं दुर्बलता का।
पथ का हर व्यवधान यहाँ बनता सोपान सफलता का।।
जिसके सिर पर पग रखकर भी, सत्य अहर्निशि बढ़ता है।
गति जितनी ही बाधित होती, उतना ऊँचा चढ़ता है।

चतुर्थ सर्ग : वापस भारत आगमन–अफ्रीका से महात्मा गाँधी भारत वापस आते हैं। गाँधी जी के आह्वान पर देश-बन्धु चितरंजन दास, पं. मोतीलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ भाई पटेल आदि नेता उनका नेतृत्व ग्रहण करते हैं। सर्ग के प्रारम्भ में चम्पारण के संघर्ष का चित्रण है। गोरे निलहों का किस प्रकार हृदय परिवर्तित किया गया, कवि ने बड़ी सूक्ष्मता से इस सर्ग में विवेचन किया है। इस आन्दोलन की सफलता के पश्चात् खेड़ा सत्याग्रह का वर्णन हुआ है, जिसमें वल्लभ भाई पटेल का चरित्र उभर कर सामने

आता है। भीषण अकाल के समय अंग्रेजों द्वारा लगान वसूली का दमन चला। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया और अंग्रेजों के हिंसात्मक दमन को बापू की अहिंसात्मक विरोध के आगे झुकना पड़ा–

सेना भी क्या करे, नहीं यदि अन्न-वस्त्र मिल पाये।
गाँव-गाँव घर-घर विरोध का दावानल लहराये।।
संगीनों से एक फूल भी खिला नहीं सकते हैं।
बन्दूकों से मार भले दें, जिला नहीं सकते हैं।।

इस अहिंसात्मक क्रान्ति का ब्रिटिश शासन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। इससे अंग्रेज काँप गये और फिर एक बार पुनः कोलकाता में क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

पंचम सर्ग : असहयोग आन्दोलन–प्रारम्भ में असहयोग-आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार होती है। नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर बापू का ओजस्वी भाषण होता है। इसी बीच चौरी-चौरा की घटना हो जाती है। महात्मा गाँधी आन्दोलन को स्थगित कर देते हैं, किन्तु अंग्रेजी सरकार उन्हें गिरफ्तार कर लेती है। अस्वस्थता के कारण जेल की अवधि पूरी किये बिना ही ये छोड़ दिये जाते हैं। अपनी सजा की शेष अवधि तक वे राजनीति से पृथक् रहकर हिन्दू-मुस्लिम-एकता, हरिजनोद्धार, खादी-प्रचार आदि रचनात्मक कार्य करते हैं। इन्हीं दिनों बापू को हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए इक्कीस दिनों का उपवास भी करना पड़ता है। अनशन का संकल्प लेते हुए बापू कहते हैं–

रुके न बाढ़ घृणा की तो मेरे जीवन का अर्थ नहीं है।
कोई भी बलिदान मनुजता की, सेवा में व्यर्थ नहीं है।।
सत्य अहिंसा की धरती पर क्यों यह रक्तपात मचता है।
मैं सौ बार मरूँ यदि मेरे मरने से भारत बचता है।।

बापू की प्राण-रक्षा के लिए सभी धर्मावलम्बी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और बापू की प्राण-रक्षा हो जाती है। जब बार-बार कहने पर भी अंग्रेजों का ध्यान इस ओर नहीं जाता तो पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में–"पूर्ण स्वतन्त्रता हमारा उद्देश्य है" का नारा लगाया जाता है।

षष्ठ सर्ग : नमक सत्याग्रह (डाँडी यात्रा)–छठे सर्ग में नमक सत्याग्रह का चित्रण है। बापू बतलाते हैं कि नमक तो सबके लिए भोज्य पदार्थ है। इस पर किसी का नियन्त्रण नहीं होना चाहिए। इस सिद्धान्त को लेकर बापू नमक सत्याग्रह का प्रारम्भ करते हैं। वे डाँडी यात्रा पर पैदल नमक कानून को तोड़ने के लिए चल पड़ते हैं। जेल सत्याग्रहियों से भर जाता है। गोलियाँ चलती हैं, बम के धमाके होते हैं; किन्तु सत्याग्रहियों के उत्साह में कमी नहीं आती। अंग्रेजी सत्ता बापू के इस सत्याग्रह से बदल जाती है। फिर बापू अंग्रेजों द्वारा गोलमेज परिषद् के लिए बुलाये जाते हैं और सन् 1937 में प्रान्तीय स्वराज्य की स्थापना का अधिकार मिल जाता है।

सप्तम सर्ग : जनक्रान्ति–सन् 1942 की जन-क्रान्ति का प्रारम्भ होता है। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द होता है। बापू के आह्वान पर सारा देश क्रान्ति की ज्वाला में टूट पड़ता है। फिर साम्राज्यवादी कुचक्र प्रारम्भ होता है। सभी नेता बन्दी बना लिये जाते हैं, किन्तु क्रान्ति की ज्वाला बुझती नहीं। अंग्रेजों का दमन-चक्र प्रारम्भ होता है। युवकों को गोलियाँ खानी पड़ती हैं। इसी समय कस्तूरबा की मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु से बापू को गहरी ठेस पहुँचती है। वे टूट जाते हैं।

अष्टम सर्ग : स्वतन्त्रता–आखिर अन्त में देश स्वतन्त्र होता है। आकाश में तिरंगा फहराने लगता है। किन्तु देशव्यापी हिंसात्मक साम्प्रदायिक उपद्रव से बापू दुखी हो जाते हैं। वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान इस देश को सच्चा मार्ग दिखलाओ। मुझमें ऐसी शक्ति दो कि मैं इन्हें शान्त कर सकूँ और–

विषमता फूट मिथ्याचार भागे।
सभी का हो उदय, नव ज्योति जागे।।
विजित हों प्यार में तक्षक विषैले।
दयामय ! विश्व में सद्भाव फैले।।

बापू की प्रार्थना के साथ खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

कथावस्तु की समीक्षा

भावात्मक सौन्दर्य

(क) वर्ण्य-विषय–'आलोक-वृत्त' नामक खण्डकाव्य वर्णनात्मक ओजपूर्ण शैली में लिखा गया एक अत्यन्त ही सुन्दर प्रभावशाली रचना है, जो 1857 से 1947 तक के स्वतन्त्रता-संग्राम का एक रेखाचित्र तो है ही, साथ-ही-साथ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

की ऐतिहासिक विचार-यात्रा एवं उनके महाप्राण चरित्र तथा उदात्त मानवीय भावों की व्यंजना इस रचना की विशिष्टता है। भारतीय इतिहास तथा महात्मा गाँधी के जीवन की मर्मस्पर्शी घटनाओं के चयन में कवि का काव्य-कौशल सराहनीय है। केवल हजार-बारह सौ पंक्तियों में लगभग एक शताब्दी के घटना-प्रवाह एवं चिन्तन को समेट कर पाठकों के समक्ष कलात्मक ढंग से प्रस्तुत कर देना साधारण काव्य-प्रतिभा का काम नहीं है।

(ख) कथा-संगठन—कवि ने कथा संगठन में इस बात का ध्यान रखा है कि गत सौ वर्षों की उन सभी प्रमुख घटनाओं को सूत्रबद्ध कर दिया जाय, जिनका भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास और गाँधी जीवन-गाथा के साथ-साथ गाँधी-दर्शन में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान हों। आदि से अन्त तक कथा में देश-प्रेम की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। यथा–

सब से मनोहर था सनातन देश जो
सबसे पुरातन पूर्ण वैदिक सभ्यता
जिस भूमि पर फूली फली
फूटी जहाँ से प्रथम किरणें ज्ञान की,
जिसकी गहन गिरि कन्दराओं में पली
दिक्काल जित मुनि सप्तमों की साधना।

देश-प्रेम के साथ राष्ट्रीय एकता, भावात्मक समन्वय, अन्तर्राष्ट्रीय चेतना, वैज्ञानिक प्रवृत्ति, सहयोग और सद्भावना के प्रति आस्था के स्वर भी खण्डकाव्य में स्थान-स्थान पर बड़ी ही सुन्दरता के साथ मुखर हुए हैं।

(ग) रस निरूपण—प्रस्तुत खण्ड-काव्य में वीर रस की प्रधानता है। पूरा खण्डकाव्य ही स्वतन्त्रता-संग्राम के वर्णन में ओज गुणों से परिपूर्ण है, किन्तु इसके साथ-ही-साथ कवि ने यत्र-तत्र शान्त, शृंगार तथा करुण रसों का समावेश किया है।

कलात्मक सौन्दर्य

(क) कथोपकथन—विवरण को विस्तार के साथ प्रस्तुत करने के प्रति कवि का विशेष आग्रह नहीं है; इसीलिए कथा में कथोपकथन को प्रमुखता नहीं दी गयी है। फिर भी कवि ने गाँधी जी का अपनी माँ से वार्तालाप, चम्पारन-सत्याग्रह में सहयोगियों से बातचीत, न्यायालय में न्यायाधीश के समक्ष वक्तव्य, नागपुर और मुम्बई के कांग्रेस अधिवेशनों में उनके प्रेरक सन्देश, कस्तूरबा से बापू का काल्पनिक वार्तालाप आदि सन्दर्भों में कवि ने बड़े ही सशक्त और प्रभावशाली कथोपकथन अत्यन्त ही संक्षिप्त, स्वाभाविक, तर्कसंगत और ओजपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

(ख) उद्देश्य—खण्डकाव्य का प्रमुख उद्देश्य स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास और बापू के जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत करके पाठकों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था को प्रतिस्थापित करना है तथा पीड़ित मानवता को सत्य और अहिंसा का शाश्वत सन्देश देकर उनमें प्राण फूँकना है।

(ग) भाषा-शैली—प्रस्तुत खण्डकाव्य की भाषा अत्यन्त ही सशक्त और ओज गुण से सम्पन्न शुद्ध खड़ीबोली है। भाषा में सरल तथा बोधगम्य तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। यत्र-तत्र मुहावरों और सूक्तियों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में जान आ गयी है।

शैली अत्यन्त ही रोचक और लालित्यपूर्ण है। ओज गुण का निर्वाह आद्योपान्त हुआ है। किन्तु जिन प्रसंगों में माधुर्य की अपेक्षा की जा सकती है, वहाँ भाषा अत्यन्त ही मधुर हो गयी है। सर्वत्र काव्य में प्रसाद गुण का प्राचुर्य है।

(घ) छन्द और अलंकार—खण्डकाव्य के आठ सर्गों में दस से अधिक छन्दों का प्रयोग हुआ है। अलंकारों के प्रति कवि का विशेष आग्रह नहीं है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZA, ZD, ZG]**
2. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर 'असहयोग आंदोलन' की घटना का वर्णन कीजिए।
3. 'आलोक-वृत्त' एक सफल काव्य है। इस उक्ति की सप्रमाण पुष्टि कीजिए।
4. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य में सत्य-अहिंसा का सुंदर समन्वय किया गया है। संक्षेप में लिखिए।
5. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य का नायक कौन है? उसके चरित्र की विशेषताएँ बताइए। **[2017 MB, MF, 19 CO, CP, 20 ZC, ZJ, ZE]**

6. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZA, ZB, ZE, ZF,ZM, ZN]**
7. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZF, ZG]**
8. 'आलोक-वृत्त' के काव्य-वैभव की समीक्षा कीजिए।
9. 'आलोक-वृत्त' में कवि की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
10. 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के रचना कौशल पर प्रकाश डालिए।
11. 'आलोक-वृत्त' की कथावस्तु (कथानक) पर प्रकाश डालिए। **[2016 SA, SE, SG, 17 ME, 19 CR, 20 ZD, ZH, ZJ]**

(5) त्यागपथी

(रामेश्वर शुक्ल 'अंचल')

आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, बरेली, सुल्तानपुर, जालौन, लखीमपुर खीरी, गोण्डा, शाहजहाँपुर, बाराबंकी

'त्यागपथी' खण्डकाव्य एक ऐतिहासिक काव्य है। कवि रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ने इस खण्डकाव्य में छठी शताब्दी के प्रसिद्ध सम्राट हर्षवर्द्धन के त्याग, तप और सात्विकता का वर्णन किया है। कवि ने इस खण्डकाव्य में सम्राट हर्ष की वीरता का वर्णन करते हुए राजनैतिक एकता और विदेशी आक्रान्ताओं के भारत से भगाने का वर्णन किया है। खण्डकाव्य के कथानक को पाँच सर्गों में बांटा गया है।

त्यागपथी : कथावस्तु (सारांश)

'त्यागपथी' श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' द्वारा रचित श्रेष्ठ खण्डकाव्य है। इस काव्य की कथा ऐतिहासिक है, जो पाँच सर्गों में विभाजित है। कथा इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग–हर्षवर्द्धन वन में आखेट के लिए जाते हैं। उन्हें वन में ही समाचार मिलता है कि उनके पिता महाराज प्रभाकरवर्द्धन को तेज ज्वर-प्रदाह है। राजकुमार तुरन्त वापस घर आते हैं और पिता का बहुत उपचार करते हैं, किन्तु पिता स्वस्थ नहीं हो पाते। उस समय हर्षवर्द्धन के बड़े भाई राज्यवर्द्धन उत्तरापथ में हूणों से युद्ध कर रहे थे। हर्षवर्द्धन ने दूत के द्वारा राज्यवर्द्धन के पास पिता की बीमारी का समाचार पहुँचाया। हर्षवर्द्धन की माता पति की बिगड़ती दशा को देखकर आत्मदाह के लिए तैयार हो जाती हैं। हर्षवर्द्धन माता को बहुत समझाते हैं, किन्तु वे नहीं मानतीं और पति की मृत्यु से पूर्व ही आत्मदाह कर लेती हैं। कुछ समय पश्चात् राजा भी स्वर्ग सिधार जाते हैं। पिता का अन्तिम संस्कार कर हर्षवर्द्धन महल में लौटकर आते हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर उनके भाई राज्यवर्द्धन तथा बहिन राज्यश्री की क्या दशा होगी।

द्वितीय सर्ग–पिता की अस्वस्थता का समाचार सुनकर राज्यवर्द्धन भी लौट आये; किन्तु माता-पिता की मृत्यु का दुःखद समाचार सुनकर उन्होंने वैराग्य धारण करने का निश्चय किया। हर्ष ने उन्हें बहुत समझाया कि वह (हर्ष) अकेले रह जाएँगे। दोनों भाइयों का वार्तालाप चल ही रहा था कि मालवराज द्वारा राज्यश्री (उनकी छोटी बहिन) को कैद करने और उसके पति गृहवर्मन को मार डालने का समाचार मिला। राज्यवर्द्धन ने वैराग्यभाव भूलकर कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने गौड़-नरेश को पराजित किया, परन्तु लौटते समय मार्ग में उनकी हत्या कर दी गयी। हर्षवर्द्धन को जब यह सूचना मिली की गौड़-नरेश द्वारा छलपूर्वक राज्यवर्द्धन का वध कर दिया गया है तो वे विशाल सेना लेकर उससे लड़ने के लिए चल पड़े, परन्तु सेनापति भण्डि से उन्हें बहिन के वन में जाने का समाचार मिला। यह समाचार पाकर हर्ष बहिन को खोजने के लिए वन की ओर चल पड़े। वहाँ एक भिक्षु द्वारा उन्हें राज्यश्री के अग्नि-प्रवेश के लिए उद्यत होने का समाचार मिला। शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर हर्ष ने राज्यश्री को बचा लिया और कन्नौज लौटकर बहिन के नाम पर ही शासन चलाया।

तृतीय सर्ग–कुलपुत्र को पराजित करने के लिए हर्ष की सेना तेजी से बढ़ती है। कुलपुत्र अज्ञात स्थान को भाग जाता है। शशांक भी भयभीत होकर अपने गौड़ देश वापस चला जाता है। अब कन्नौज पर हर्षवर्द्धन का अधिकार हो जाता है। हर्ष, बहन राज्यश्री को राजसिंहासन पर बैठाना चाहता है; किन्तु राज्यश्री हर्ष को ही राजसिंहासन पर बैठने का आग्रह करती है। हर्ष न चाहते हुए भी प्रमुखजनों और बहिन के आग्रह से बहिन के नाम पर कन्नौज का शासन करने लगता है और वहाँ की सारी व्यवस्था को ठीक कर देता है। पड़ोसी राज्य को जीतने के लिए वह छह वर्षों तक लगातार युद्ध करता है। वह उत्तराखण्ड, कश्मीर, पंजाब, मिथिला, बिहार, उत्कल, गौड़, पंच, सिन्धु, नेपाल, सोरठ आदि देशों को जीतकर उनसे साम्राज्यभक्ति का वचन लेकर राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य-पूर्ति के लिए उन्हें छोड़

देता है। उसे राज्यविस्तार का लोभ रंचमात्र भी नहीं है। उसका उद्देश्य है कि देश को अखण्ड और शक्तिशाली बनाकर वह हूणों और यवनों से देश को सुरक्षित और मुक्त बनायेगा।

चतुर्थ सर्ग—राज्यश्री भिक्षुणी न बन पाने के कारण अत्यन्त ही क्षुब्ध रहती है। वह बराबर इसी प्रयास में रहती है कि किसी प्रकार वह संघ की शरण में चली जाय। दिवाकर मित्र उसे नित्य शिक्षा दिया करते हैं। वह एक दिन हर्ष से पूछती है, "मैं आपके आदेशानुसार गृहस्थ बनकर आज तक राज्य के समस्त कठिन कार्यों को करती रही। निरन्तर दिवाकर मित्र-जैसे आचार्य का सान्निध्य प्राप्त करके भी मुझे शान्ति नहीं मिल पा रही है, अतः आप मुझे भिक्षुणी बनने की आज्ञा प्रदान करें।"

हर्षवर्द्धन राज्यश्री को समझाता है, "तुम्हारा त्याग किसी संन्यासिनी से कम नहीं है। मुझे भी राज्य का कोई लोभ नहीं है। मैंने भी तुम्हारे साथ संन्यास ग्रहण करने का आश्वासन दिया था। मैंने देश को जीतकर बहुत-सी सम्पत्ति इकट्ठी कर ली है। उसे दीन-दुखियों में बाँटकर तुम्हारे साथ राजमहल में भिखारी बनकर रहना चाहता हूँ। केवल भिक्षा-वृत्ति ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। हृदय का त्याग और निस्पृहता आवश्यक है।"

पंचम सर्ग—खण्डकाव्य के अन्तिम और पाँचवें सर्ग में हर्षवर्द्धन के सर्वस्व-त्याग का वर्णन है, जिसके लिए वह आज तक अपनी दानशीलता हेतु प्रख्यात है। वह प्रयाग के संगम पर पंचवर्षीय आयोजन करता है और पाँच वर्षों में संचित सभी रत्न, धन-धान्य, वस्त्रादि को दीन-दुखियों में वितरित कर देता है।

हर्ष इस प्रकार प्रत्येक पाँचवें वर्ष मोक्ष-मेला का आयोजन करता है। सभी ब्राह्मणों, श्रमणों तथा धार्मिक व्यक्तियों को आमन्त्रित करता है। पहले दिन भगवान बुद्ध की स्थापना होती है और दिन-भर दान का कार्यक्रम चलता है। दूसरे दिन आदित्य की मूर्ति की स्थापना होती है और हर्ष मुक्तहस्त से दान देता है। इस प्रकार नित्य ही विविध धर्मों और सम्प्रदायों की प्रतिष्ठा स्वरूप महीनों दान का कार्यक्रम चलता है। यह पंचवर्षीय मोक्ष-मेला उसके जीवन में छह बार लगता है। हर्ष के इस उदार चरित्र से प्रजा कृत-कृत्य हो जाती है।

कथावस्तु की समीक्षा

(क) भाव-सौन्दर्य—कवि श्री 'अंचल' ने 'त्यागपथी' नामक खण्डकाव्य की कथावस्तु इतिहास-प्रसिद्ध घटना हर्ष-चरित्र से लिया है। कथानक के सभी पात्र ऐतिहासिक हैं। बिना किसी काल्पनिक घटना का समावेश किये, केवल ऐतिहासिक तथ्यों और पात्रों के आधार पर सारी कथा की बुनावट में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आने पायी है। कवि खण्डकाव्य के माध्यम से त्याग, स्वदेश-प्रेम, प्रजापालन, धर्म-निरपेक्षता, लोक-कल्याण आदि शाश्वत मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु हर्ष की राज्य-व्यवस्था को एक आदर्श गणतन्त्रात्मक शासन-प्रणाली माना है तथा युग-चेतना के लिए अपना प्रेरणादायक स्वर मुखर किया है।

हर्ष की शासन-व्यवस्था—हर्षवर्द्धन के युग में धार्मिक कट्टरता थी। बौद्धों और ब्राह्मणों में बराबर संघर्ष होता रहता था। छोटे-छोटे राज्य एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। हूणों और यवनों के आक्रमण से देश की शान्ति को बराबर खतरा रहता था। हर्ष ने अपनी वीरता, पराक्रम, साहस, धैर्य और उदारता से देश की कुव्यवस्था में सुधार ला दिया।

छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर हर्ष ने उनका राज्य लिया नहीं, उन्हें लौटा दिया; और उन्हें केन्द्रीय एकता के सूत्र में आबद्ध कर दिया। धार्मिक भेद-भाव को मिटाकर हर्ष ने धार्मिक एकता पर बल दिया और एक ऐसी प्रजानीति को जन्म दिया, जो आज के युग के लिए अत्यन्त ही प्रेरणादायक है। यथा–

न बौद्धों-आर्यों में हो कभी संघर्ष कोई।
रहे धर्मैक्य दोनों में विषमता हो न कोई।।

हर्ष के राज्य में सभी लोग अपने धर्मपालन में स्वतन्त्र थे। शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, शैव सभी मत अपने पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर लोक-कल्याण का कार्य करते थे। राज्य में विद्या, कला, विज्ञान की त्रिवेणी बहा करती थी। राज्य में सर्वत्र शान्ति थी—

बही विद्या कला विज्ञान की अनुपम त्रिधारा।
सदाचारिणी अहिंसक था बना साम्राज्य सारा।।

रस-निरूपण—'त्यागपथी' काव्य में करुण, वीर और शान्त रस की ही प्रधानता है। करुण रस की व्यंजना देखिये—

माँ की ममता की मूर्ति राज्यश्री सुकुमारी।
थी सदा पिता को माँ को प्राणोपम प्यारी।

शान्त रस का उदाहरण देखिए—

हिंसा सदैव देती है जन्म घृणा को।
पोषित करती रहती है धनतृष्णा को।।

वीर रस की व्यंजना देखिए—

अरि रुण्ड है मंगल कलश, अरि मुंड के दीपक जलें।
चन्दन प्रलेपन रक्त का, दिग्पाल अंगों में मलें।।

(ख) कलात्मक सौन्दर्य—भाषा-शैली—प्रस्तुत खण्डकाव्य की भाषा कथावस्तु के अनुकूल ही है। तत्सम शब्दों की बहुलता है, अवसर के अनुकूल भाषा का स्वरूप परिवर्तनशील है। कहीं-कहीं लचक, तनिक ज्यादा आदि उर्दू, दीन, रंच जैसे देशज शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा में सूक्तियों के प्रयोग से चमत्कार आ गया है।

छन्द और अलंकार—खण्डकाव्य में अधिकांश सर्ग 26 मात्राओं के गीतिका छन्द में वर्णित हैं। पाँचवें सर्ग के अन्त में घनाक्षरी छन्द का प्रयोग हुआ है। कवि ने छन्दों को अवसर के अनुकूल प्रयोग किया है, जिससे अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता आ गयी है।

वातावरण का चित्रण—अपने सीमित क्षेत्र के अन्तर्गत कवि को जहाँ कहीं भी देश, काल अथवा परिस्थिति के चित्रण का अवसर मिला है, बड़ी ही सजीवता से उसे चित्रित किया है। प्रभाकरवर्द्धन की रोगशैय्या का, राज्यश्री के अग्निदाह का, विन्ध्य के वनों का, हर्ष की राज्य-व्यवस्था का, पंचवर्षीय प्रयाग मोक्ष के मेला का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। चित्रण में सजीवता एवं स्वाभाविकता है।

कथोपकथन—काव्य में हर्ष-राज्यश्री, हर्ष-आचार्य दिवाकर मित्र, राज्यश्री और दिवाकर मित्र, हर्ष और महारानी यशोमती, हर्ष और प्रभाकरवर्द्धन, हर्ष और राज्यवर्द्धन आदि के बीच कथोपकथन का आयोजन किया गया है। कथोपकथन अत्यन्त ही नाटकीय एवं काव्यमय है। उसमें स्वाभाविकता, सरलता और प्रभावोत्पादकता है।

उद्देश्य—प्रस्तुत खण्डकाव्य का उद्देश्य हर्ष और राज्यश्री के चरित्र के माध्यम से पाठकों में देश-प्रेम, त्याग-भावना, आदर्श गणतन्त्र की स्थापना, धर्म-नीति, न्याय, अहिंसा, प्रेम, शान्ति आदि शाश्वत मानवीय मूल्यों की स्थापना है।

किसी भी साहित्यिक कृति में जब किसी सद्गुणी, सदाचारी और महान व्यक्तित्व रखने वाले ऐतिहासिक पुरुष को चित्रित किया जाता है तो इसका एकमात्र उद्देश्य जनसाधारण में उन सद्गुणों के प्रति भावात्मक संवेदना जाग्रत करना होता है। इतिहास से इन गुणों की केवल जानकारी प्राप्त होती है, किन्तु साहित्य में इन गुणों को रस-पाक का सम्प्रेषण प्राप्त होता है, जो मनुष्य की आत्मा को भावात्मक उदात्तता की स्थिति में पहुँचा देता है और उन सद्गुणों की व्यापक छाप पाठक के अन्तर्मन में पैठती है।

प्रस्तुत खण्डकाव्य 'त्यागपथी' का उद्देश्य भी यही है। इसमें हर्षवर्द्धन के महान गुणों को भावात्मक अभिव्यक्ति देकर उसके असाधारण व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। कवि का उद्देश्य जन-चेतना में, विशेष रूप से युवा-चेतना में इन सद्गुणों के प्रति भावात्मक संवेदना उत्पन्न करना है। खण्डकाव्य की भाषा-शैली, अभिव्यंजना-शक्ति एवं उदात्त रस-योजना कवि के इस उद्देश्य को प्राप्त करने की दृष्टि से पूर्णतः सफल सिद्ध हुई है। 'त्यागपथी' एक उदात्त गुणों के प्रति मन में भावात्मक संवेगों को उत्पन्न करने में सक्षम खण्डकाव्य है।

'त्यागपथी' एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित खण्डकाव्य है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. 'त्यागपथी' की कथावस्तु का मूल आधार ऐतिहासिक है। कवि ने प्रसिद्ध सम्राट हर्षवर्द्धन के जीवन-प्रसंगों को लेकर इस कथावस्तु का संगठन किया है। यद्यपि इनके गठन में कवि ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है, तथापि इस कथावस्तु का मूल आधार ऐतिहासिक ही है।

2. इसकी कथावस्तु सम्राट हर्षवर्द्धन के राज्यारोहण से लेकर उनके विशाल साम्राज्य-गठन एवं शान्ति-स्थापना के बाद उनके त्यागमय जीवन से सम्बन्धित है। इसके पश्चात् भी इस विस्तृत पृष्ठभूमि पर आधारित कथानक के अन्तर्गत ही हर्षवर्द्धन के युद्धों एवं साम्राज्य-गठन आदि का अत्यन्त प्रभावकारी चित्रण दृष्टव्य है।

3. कथावस्तु का संगठन अत्यन्त सुनियोजित रूप में हुआ है। शिकार के समय हर्षवर्द्धन को पिता की मृत्यु की सूचना प्राप्त होने से इस कथावस्तु का प्रारम्भ होता है और यह अनवरत सुनियोजित रूप से विकसित होती हुई हर्षवर्द्धन के त्याग का चित्रण कर समाप्त हो जाती है।

4. इस खण्डकाव्य की कथावस्तु में हर्षवर्द्धन एवं राज्यश्री दो ही पात्र प्रमुख हैं। इनकी चारित्रिक विशेषताओं को प्रकाशित करने के लिए अन्य पात्रों को भी सम्मिलित किया गया है।

5. इसकी कथावस्तु में देश-काल एवं वातावरण का चित्रण अत्यन्त कुशलता से किया गया है। काव्यगत रचना में इस प्रकार के चित्रण में कई समस्याएँ होती हैं, किन्तु कवि ने इस दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

6. इस खण्डकाव्य की कथावस्तु का चयन एवं समायोजन देशप्रेम, मानवीय संवेदना, उत्तम राज्य-प्रशासन, त्याग एवं आदर्श की उदात्त अभिव्यक्ति हेतु किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'त्यागपथी' के चतुर्थ सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की पृष्ठभूमि की समीक्षा कीजिए।
3. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए। **[2020 ZE]**
4. 'त्यागपथी' के आधार पर हर्षवर्द्धन का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SF, 17 MB, MC, MD, 19 CQ, CR, 20 ZA, ZD, ZE, ZG,ZH, ZN, ZJ]**
5. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर इसके नायक के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
6. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **[2020 ZA, ZB, ZG]**
7. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री के चरित्र की विशेषताएँ बताइए। **[2016 SE, 19 CL, CM, CO, 20 ZB, ZC, ZD, ZF, ZM]**
8. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख नारी पात्र की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
9. 'त्यागपथी' नाम की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
10. 'त्यागपथी' में निहित आदर्शों का उल्लेख कीजिए।
11. 'त्यागपथी' की कथावस्तु (कथानक) संक्षेप में लिखिए। **[2016 SD, SE, SF, 17 ME, 19 CM, CO, 20 ZH, ZJ]**

(6) श्रवण कुमार

(डॉ0 शिवबालक शुक्ल)

मेरठ, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, हरदोई, बांदा, बहराइच, हमीरपुर

कविवर डॉ0 शिवबालक शुक्ल द्वारा रचित खण्डकाव्य 'श्रवण कुमार' नौ सर्गों में बँटा हुआ है। पौराणिक कथा पर आधारित इस खण्डकाव्य में कवि ने अपने काव्यात्मक कौशल का कुशलता से परिचय दिया है।

श्रवण कुमार : कथावस्तु (सारांश)

'श्रवण कुमार' डॉ. शिवबालक शुक्ल द्वारा लिखित एक पौराणिक, प्रेरणादायक एवं भाव-प्रधान खण्डकाव्य है, जिसकी कथावस्तु की पृष्ठभूमि वाल्मीकि रामायण से बीज रूप में ली गयी है और कवि ने अपनी कलात्मक काव्य-प्रतिभा से उसे युगानुरूप परिवेश में पुनरुद्भाषित करने का प्रयास किया है। इस खण्डकाव्य की कथा मंगलाचरण को छोड़कर अयोध्या आश्रम, आखेट, श्रवण, दशरथ, सन्देश, अभिशाप, निर्वाण और उपसंहार नौ सर्गों में विभक्त है। मंगलाचरण में कवि सरस्वती और गणेश की वन्दना करके खण्डकाव्य का प्रारम्भ करता है।

प्रथम सर्ग : अयोध्या वर्णन – खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग में अयोध्या की स्थापना, नामकरण, राजकुल-वैभव तथा उसकी उपलब्धियों का विवरण देकर कथा की पृष्ठभूमि तैयार की गयी है। तत्कालीन वातावरण के चित्रण में कवि ने अपनी युग-बोध की जागरूकता को भी स्थान-स्थान पर परिलक्षित कराने का प्रयास किया है। 'स्वर-वेधी' कुमार दशरथ पावसी-सौन्दर्य और सरसतापूर्ण वातावरण में राजसी वृत्ति के अनुसार सरयू वन में मृगया के लिए योजना बनाते हैं।

द्वितीय सर्ग : आश्रम– खण्डकाव्य के दूसरे सर्ग में सरयू नदी से थोड़ी दूर स्थित उस आश्रम का मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया गया है, जहाँ श्रवण कुमार और उनके अन्धे माता-पिता ऋषि-दम्पति के रूप में शान्त और सुखमय जीवन बिता रहे हैं। आश्रम और वन-प्रदेश के प्रकृति-चित्रण में कवि ने जीवन की सहजता, पशु-पक्षियों एवं कीट-पतंगों की निर्वैरता का उल्लेख करते हुए युग-बोध के नये परिवेश में भावात्मक एकता एवं समाजवादी झाँकियों को निरूपित किया है।

भारतीय गृहस्थ के अध्यात्मपरक जीवन के आदर्शों का आधिभौतिक मान्यताओं के दो किनारों के बीच बहती हुई भावधारा का चित्रण भी इस सर्ग में बड़ी सुन्दरता से हुआ है। युवक श्रवण कुमार इसी पवित्र वातावरण में अपने चरित्र का विकास करता है। वह नित्य

अपने अन्धे माता-पिता को श्रद्धापूर्वक स्नान कराता है, पूजा-सामग्री जुटाता है। नित्य माता-पिता की सेवा में लीन रहता है। दोनों को 'काँवर' में बिठाकर देवालयों और तीर्थ-स्थानों पर ले जाता है।

तृतीय सर्ग : आखेट – एक दिन गोधूलि बेला में महाराज दशरथ भोजन करने के बाद विश्राम कर रहे थे कि उनके मन में आखेट की इच्छा जागृत हुई। उन्होंने सारथि को बुला भेजा और रात्रि के चतुर्थ पहर में प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की। रात्रि में सोते समय राजा ने स्वप्न में देखा कि एक हिरन का बच्चा उनके बाण से मर गया है और हिरनी खड़ी हुई आँसू बहा रही है।

राजा दशरथ बहुत सबेरे रथ पर सवार होकर शिकार के लिए चल दिये। वे शीघ्र ही अपने इच्छित स्थान पर पहुँच गये। रथ से उतरकर वे घने वन में एक अन्धकारमय स्थान में छिपकर बैठ गये। धनुष-बाण सँभाले वे किसी वन्य पशु की प्रतीक्षा करने लगे।

चतुर्थ सर्ग : श्रवण कुमार – इधर श्रवण कुमार के माता-पिता को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण कुमार से जल लाने को कहा। श्रवण जल लेने के लिए नदी के तट पर गया और जल भरने के लिए कलश नदी के जल में डुबोया। घड़े के शब्द को राजा दशरथ ने किसी वन्य पशु की आवाज समझा। उन्होंने तुरन्त शब्दबेधी बाण चला दिया। बाण श्रवण कुमार को लगा। श्रवण कुमार चीत्कार करता हुआ धरती पर गिर पड़ा। मानव-स्वर सुनकर राजा दशरथ चिन्तित हो उठे और 'प्रभु कल्याण कर' कहते हुए नदी के किनारे जा पहुँचे।

राजा दशरथ के बाण से घायल श्रवण नदी के तट पर पड़ा था। वह अपने माता-पिता की चिन्ता में व्याकुल था और बिलख-बिलखकर कह रहा था कि मेरे असहाय अन्धे माता-पिता का भविष्य क्या होगा?

पंचम सर्ग : दशरथ – पंचम सर्ग में दशरथ के अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण हुआ है। आश्रम को जाते समय रास्ते में आत्म-चिंतन द्वारा दशरथ पश्चात्ताप कर रहे हैं। दशरथ अपने अपराध की गम्भीरता और अक्षम्यता पर विचार करते हैं और कहते हैं—

करें मुनीश क्षमा वे होंगे, निस्पृह करुणा सिंधु अगाध,
पर मेरे मन न्यायालय में, क्षम्य नहीं है यह अपराध।
किस प्रकार किन शब्दों में मैं दुःखत वृत्त सुनाऊंगा?
हो ऋषि कोप अनल से बच कर भी कैसे सुख पाऊंगा?

इन्हीं विकल्पों-संकल्पों के साथ कुमार दशरथ आश्रम में पहुँच जाते हैं।

छठा सर्ग : सन्देश – छठे सर्ग में श्रवण कुमार के माता-पिता की वृद्धावस्था की असहाय स्थिति तथा ममता भरे वात्सल्य का चित्रण है तथा दूसरी ओर दशरथ के क्षोभ भरे आत्म-लांछन का मार्मिक चित्रण है। ऋषि-दम्पति श्रवण कुमार के आगमन की प्रतीक्षा में चिन्तित और व्याकुल हैं। दशरथ के पैरों की आहट सुनकर वे बोल उठते हैं—

कहाँ पुत्र थे? मेरी लकुटी, वाहन मेरे—मेरी आँख,
दीन-कृष्ण की सोन चिरैया, भीगे हुए विहग की पाँख।
गति हीनों की गति उर-उपनिधि, अंध लोचनों के आलोक,
जीवन के प्रिय जीवन हो तुम, करो बोल कर हमें अशोक।

दशरथ कहते हैं—"कृपया जल लीजिए" यह सुनते ही वे पूछ बैठते हैं—

"आप कौन हैं? मेरा पुत्र जल लाता होगा। आप किसलिए जल लाये हैं अतिथिवर? आपके शुभागमन से मेरा आश्रम पवित्र हो गया।"

कुमार दशरथ एक ओर अपने कुकृत्य और दूसरी ओर ऋषि-दम्पति के आतिथ्य-भाव की तुलना पर आत्मग्लानि से झुक जाते हैं। वे अपना परिचय देते हुए अपने अपराध को ऋषि-दम्पति के सामने कहते हैं और क्षमा-याचना करते हैं। दोनों माता-पिता पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही शोक-सन्तप्त हो जाते हैं और पुत्र को देखने के लिए कुमार दशरथ के साथ चल पड़ते हैं।

सातवाँ सर्ग : अभिशाप– खण्डकाव्य का सातवाँ सर्ग सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण है। इसमें करुण रस का सांगोपांग परिपाक हुआ है। माता-पिता श्रवण कुमार की पूर्व स्मृतियों को दोहरा कर करुण विलाप-करते हैं—

कौन हमारे लिए विपिन से कन्द मूल फल लायेगा?
कौन अतिथि सा हमें खिलाने, में सच्चा सुख पायेगा?
मज्जन-स्नान कार्य सम्पादन, हित जल लायेगा अब कौन?
पूजा के उपचार हमारे हेतु जुटायेगा अब कौन?

रो-रो कर पिता कहते हैं—"पुत्र! तुम मेरे लिए सदैव जल लाया करते थे, अब क्या तुम मुझसे ही जलांजलि लोगे? तुम हमारे आगे-आगे चलते रहे, क्या मृत्यु में भी आगे चल दिये? तुम हमें साथ लेकर अनेक तीर्थों का दर्शन कराते रहे, क्या अब अकेले ही स्वर्ग

का उपयोग करने चल पड़े? यहाँ तुम्हारा कैसा अविवेक है? यदि तुम अपने पिता से रुष्ट हो तो मुझसे भले ही मत बोलो, किन्तु अपनी वृद्धा असहाय माता के प्रति तो अपने कर्तव्य को याद करो।''

तुमने दशरथ? हा लेने में, नाम सिहर जाता है प्राण,
कहूँ अधिक क्या छोड़ एक दो, मुझ पर भी कराल निज बाण।

अन्त में व्यथित हो पिता कुमार दशरथ से कहते हैं–''राजन् ! आपने यह दुःखद समाचार सुनाकर मेरे रोम-रोम में सैकड़ों बाण बेध दिये हैं। यदि आप अपना अशुभ कर्म मुझसे आकर न कहे होते तो आज मेरे ललाट के टुकड़े-टुकड़े हो गये होते। आपने अपना अपराध स्वीकार कर लिया अन्यथा आपको महापाप लगता। आर्य-पुत्र होकर भी आप गोहत्या के पापी होते। यदि जान-बूझकर आप बाण चलाये होते तो आज रघुवंश की कोई रक्षा न कर पाता। भला बस इतना ही हुआ कि आपने अनजान में ही बाण चलाया; किन्तु फिर भी आपको अपराध का दण्ड तो मिलेगा ही। जो बबूल लगायेगा उसे आम कैसे मिल सकता है।'' अन्त में वे शाप देते हैं–

पुत्र-शोक में कलप रहा हूँ, जिस प्रकार मैं अज नन्दन।
सुत वियोग में प्राण तजोग, इसी भाँति करके क्रन्दन।।

शाप सुनकर माता को खेद होता है। दशरथ तो सुनकर काँप जाते हैं।

आठवाँ सर्ग : निर्वाण–अभिशप्त दशरथ दुःखी हैं, सारथि भी शोक-सन्तप्त है। उधर श्रवण कुमार के माता-पिता भी रोते-रोते निरुपाय हो जाते हैं। अतः अन्त में उनकी मोह-निद्रा टूटती है। ज्ञान-ज्योति के कारण उनका पैतृक कर्त्तव्य जाग उठता है। पिता क्रोध के वशीभूत होकर दशरथ को शाप देने के लिए पश्चाताप करते हैं। किन्तु अब शाप-निवारण के लिए कोई उपाय तो है ही नहीं। वे विवश हैं। अन्त में रोना रोककर जलांजलि देने के लिए उठते हैं। श्रवण दिव्य रूप में पिता को आश्वस्त करता है। साथ ही माता-पिता भी आवागमन के बन्धनों से मुक्त हो गये हैं। उन्हें वह स्थान मिला है जहाँ–

नहीं जहाँ कुंठाएँ होंगी, होगा हेय, न होगा राग।
होंगे सुलभ अयोध्या, काशी, मथुरा और प्रयाग।।

इतना कहकर दिव्य शरीरधारी श्रवण कुमार स्वर्गलोक को चल पड़ता है। जलांजलि देकर सूत द्वारा निर्मित चिता पर प्राण दे देते हैं और उनकी जीवात्मा ब्रह्म में लीन हो जाती है।

नवाँ सर्ग : उपसंहार–खिन्न दशरथ सारथि सहित अयोध्या लौट आते हैं। लोकापवाद के भय से यह घटना कोई किसी से नहीं कहता। किन्तु राम-वन-गमन के समय मृत्यु के कुछ पूर्व दशरथ को मुनि का उक्त शाप याद आता है और वे कौशल्या से कहकर अपने मन की व्यथा को दूर कर देते हैं।

कथावस्तु की समीक्षा

श्रवण कुमार का काव्य-सौष्ठव–(अ) भावात्मक-सौन्दर्य–प्रस्तुत खण्डकाव्य मूलतः भाव-प्रधान खण्डकाव्य है। भावात्मक सौन्दर्य ही इसका गुण है। अयोध्या का राज्य-वैभव, वर्षा, सन्ध्या, आश्रम आदि की काव्यात्मक अभिव्यक्ति में चित्रमयता सजीव हो उठी है, जिसके माध्यम से कवि अपने निम्नलिखित उद्देश्यों को परिलक्षित करने में पूर्ण सफल होता है–

अयोध्या-वन में प्राचीन सांस्कृतिक झलक–अयोध्या के राजवंश की महिमा का चित्रण करते समय कवि प्राचीन भारतीय संस्कृति और कला की एक झाँकी प्रस्तुत कर देना चाहता है–

भक्ति भावना संक्रामक थी, घर-घर उसका हुआ प्रसार।
थे बिखेरते सुरभि अगरु घृत, चन्दन धूप और घन सार।।
नभ चुम्बी प्रासाद गगन के, तारों से भरते संलाप।
फहर ध्वजाएँ पवन में, करती प्रेषित प्रबल।।

नवीन युग-बोध की परिकल्पना–कवि प्रस्तुत खण्डकाव्य के प्राचीन कथानक में नवीन युग की परिकल्पना करके एक नयी चेतना मुखर कर रहा है। उपभोग की वस्तुओं का बाजार में अभाव, योग्यता की उपेक्षा, वर्ग-वैषम्य, चोरी, डकैती, अनुशासनहीनता, जातीय संकीर्णता आदि राष्ट्र की ऐसी समस्याएँ हैं, जो उसे अधोगति की ओर ले जा रही हैं। कवि ने विभिन्न वातावरणों के चित्रण के माध्यम से राष्ट्र और शासन-व्यवस्था का एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

त्याग, सेवा, क्षमा, उदारता, सहिष्णुता आदि उदात्त गुणों की उद्‌भावना–खण्डकाव्य के माध्यम से कवि पाठकों में त्याग, सेवा, क्षमा, उदारता, सहिष्णुता आदि मानवीय उदात्त गुणों का समावेश करने का बड़ा ही सुन्दर आयोजन करता है। दशरथ, श्रवण कुमार और ऋषि-दम्पति के चरित्र अलग-अलग इन मानवीय गुणों के प्रतीक बनकर सजीव हो उठते हैं।

भावात्मक एकता, सांस्कृतिक श्रेष्ठता, जातीय अभेदता, नैतिकता और आत्मालोचन—उक्त सभी इस काव्य में स्थान-स्थान पर मुखर होते हैं, जो भावी राष्ट्र-निर्माण के लिए अत्यन्त ही सहायक हैं।

प्रकृति-चित्रण—प्रस्तुत खण्डकाव्य की सीमित परिधि में भी भावों की प्रधानता होने के कारण कवि को प्रकृति-चित्रण का बहुत ही सुन्दर अवसर मिलता है। अयोध्या नगर, सरयू-वन के आश्रम आदि के चित्रण में कवि की प्रकृति-तन्मयता साकार हो उठी है।

वातावरण—काव्य में देश-काल और परिस्थितियों का स्थान-स्थान पर चित्रण करके पाठकों को काव्य की भावभूमि को स्पष्ट और बोधगम्य बनाने का प्रयास बड़ा ही सुन्दर है। किसी घटना को प्रारम्भ करने से पूर्व सर्ग के प्रारम्भ में ही वातावरण का चित्रण दे देता है। कथानक की सारी घटनाएँ अयोध्या और निकट के सरयू-वन में ही कुछ घण्टों के अन्तराल में घटित हुई हैं। अतः उपसंहार वाली घटना को निकालकर कथानक में संकलन त्रय कर पूरा-पूरा निर्वाह किया गया है।

रस-निरूपण— रस-निरूपण की दृष्टि से प्रस्तुत खण्डकाव्य में करुण रस की प्रधानता है, जिसका प्रभाव बड़ा ही स्थायी और मर्मस्पर्शी है। दशरथ के अन्तर्द्वन्द्वों, ऋषि-दम्पति के रुदन, क्रन्दन तथा श्रवण कुमार की व्यथा में करुण रस का बड़ा ही सुन्दर परिपाक हुआ है। करुण के साथ-साथ वात्सल्य रस का भी सुन्दर चित्रण हुआ है जब ऋषि-दम्पत्ति श्रवण कुमार की प्रतीक्षा में आकुल हैं। शाप देते समय भयानक रस का चित्रण हुआ है। काव्य में इन सभी रसों के होते हुए भी करुण रस की ही प्रधानता है।

(ब) कलात्मक सौन्दर्य-भाषा-शैली—खण्डकाव्य की भाषा अवसर और पात्रों के अनुकूल अत्यन्त ही सरल, किन्तु संस्कृतनिष्ठ है। साथ-ही-साथ पारिभाषिक और सामयिक शब्दों का भी यथास्थान प्रयोग हुआ है। जैसे अतिरथी, जवनिका, शातघ्नी आदि। काव्य में लोकोक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा ओज और प्रसाद गुणों से सम्पन्न है। भाषा में सरल और सुन्दर बिम्ब-योजनाओं के साथ अन्तर्भेदी भाव-प्रवणता भी विद्यमान है।

छन्द-योजना—प्रस्तुत खण्डकाव्य में मुख्यतः वीर छन्द का प्रयोग हुआ है, जो 16, 15 मात्राओं की यति और अन्त में गुरु-लघु के योग से बनता है। कथा प्रवाह में कहीं 30 मात्रा वाले छन्द भी आ गये हैं, जो ताटंक, लावनी और कुंकुम छन्द की कोटि के हैं।

अलंकार— खण्डकाव्य में अलंकारों का बड़ा ही सुन्दर और स्वाभाविक चित्रण किया गया है। प्रयोगवादी शैली में नये रूपक और उपमानों के बड़े सुन्दर प्रयोग हुए हैं। काव्य में श्लेष, यमक, वक्रोति, वीप्सा, पुनरुक्तिप्रकाश, उपमा, रूपक, प्रतीप, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अनुप्रास आदि अलंकारों के प्रयोग बहुतायत से हुए हैं। इसके साथ-साथ सन्देह, परिसंख्या, परिकरांकुर, दृष्टान्त आदि अलंकारों का भी प्रयोग बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

1. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के कथानक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZG]**
2. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए। **[2020 ZA, ZB, ZE, ZH]**
3. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **[2020 ZC, ZE]**
4. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर दशरथ का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[17 MF, MG, 19 CR]**
5. 'श्रवण कुमार' शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
6. 'श्रवण कुमार' की वर्तमान युग में क्या प्रासंगिकता है? स्पष्ट कीजिए।
7. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य में दशरथ के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण कीजिए। **[2020 ZB]**
8. 'श्रवण कुमार' के पंचम सर्ग के आधार पर दशरथ के अन्तर्द्वन्द्व का वर्णन कीजिए। **[2020 ZN]**
9. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। **[2016 SB, SD, SP, 19 CR, 20 ZC]**
10. 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के नायक (श्रवण कुमार) का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2016 SA, SE, 17 MB, 19 CM, CN, CP, 20 ZA, ZD, ZF, ZG, ZM, ZH, ZJ]**